

यह हवाल लिखि पत्री काहीं । दै पठयो यक मनुज तहाँहीं ॥
सो पाती दिय तिन कर जाई । बांचत गयो कोपमें छाई ॥

दोहा—तुरत जवाब लिखायकै, दीन्ह्यो तेहिं कर धारि ॥

आप दरश पावें जो हम, धनि धनि भाग्य हमारि ॥ ४१ ॥
मुन्यो न हम वघेलको नामा । निरखि होहिं अब पूरण कामा ॥
पाती असि लिखाय शिरनेता । बांध्यो युद्ध करनको नेता ॥
फौज जोरि आगे कछु जाई । ठाढ़े भये रोप अति छाई ॥
इतते ब्रह्मदेवकी सैना । काल समान गई कछु भैना ॥
भगी फौज शिरनेतन केरी । नृप शिरनेत बंधु तहँ वेरी ॥
पकरि भूप शिरनेतहिं काहीं । सौँप्यो सो अतिहीं सुख माहीं ॥
ब्रह्मदेवको निज सब देशू । सौँपिदियो शिरनेत नरेशू ॥
तहँ नृप ब्रह्मदेव सहुलासा । करत भये कछु वासर वासा ॥

दोहा—ब्रह्मदेवके होतभो, तनय सिंह जेहिं नाम ॥

सिंहदेवके पुनि भये, वेणीसिंह ललाम ॥ ४२ ॥

भूपति वेणीसिंहके, नरहरिसिंह सुजान ॥

नरहरि हरिके होतभे, भैददेव मतिवान ॥ ४३ ॥

शिरनेतनके सहित उछाहा । भैददेवको कियो विवाहा ॥
भैददेवको परम प्रतापा । बाढ़्यो रिपु न देत अति तापा ॥
भैददेव पुनि पितु ढिग जाई । सादर विनती कियो सुहाई ॥
कछु दिन आप करें इत वासा । सैल करों में सहित हुलासा ॥
अस कहि वंदि चरण युत चैना । गोरखपुर आयो युत सैना ॥
तहँको भूपति मिलि सुख माहीं । कछु दिन राखत भयो तहाँहीं ॥
भैददेवके तहँ सुत भयऊ । नाम शालिवाहन तेहिं ठयऊ ॥
सुवन शालिवाहन पुनि जायो । विरसिंह देव नाम सो पायो ॥

दोहा-भै अति विरसिंहदेवकी, द्विज साधुनमें प्रीति ॥

नीति रीति प्रगट्यो पुहुमि, त्यागि अनैकी रीति ४४ ॥
 भैददेव नृप सहित उछाहा । तनयकेर कीन्ह्यो सुविवाहा ॥
 दीन्ह्यो अमित द्विजनको दाना । पून्ह्यो सुयश महान जहाना ॥
 विरसिंहदेव सुयश जग छायो । होत भयो हरिभक्त सोहायो ॥
 बड़े भक्त जे जक्त कहाये । नामदेव आदिकन टिकाये ॥
 हमहुँ जाय तहँ अति सुख भरि कै । नामदेवसों चरचा करि कै ॥
 राममंत्र भूपति कहँ दीन्ह्यो । वरवस वश नरेश करिलीन्ह्यो ॥

दोहा-भूपति विरसिंहके भयो, वीरभानु सुतजान ॥

भानु समान उदोत भो, तेज अमान जहान ॥ ४५ ॥
 कछु दिन बीते विरसिंह देवा । पितुसों विनय कियो करि सेवा ॥
 सुचित आप इत भजन करीजै । सादर म्वहिं निदेश प्रभु दीजै ॥
 मकर प्रयाग करहुँ स्नाना । प्रगटहुँ तुव यश अमित जहाना ॥
 सुनत शालिवाहन सुत वैना । आयसु दियो जाहु युत चैना ॥
 सुनि विरसिंहदेव भूपाला । लै सँग सुत बहु सैन्य उताला ॥
 आय प्राग करि कै स्नाना । दान द्विजन दिय विविध विधाना ॥
 विविध भांति पकवान सुहायो । विप्रनको भोजन करवायो ॥
 पुनि करि कै छावनी सभागा । वर्यो कछुक दिन मध्य प्रयागा ॥

दोहा-बोलि जमींदारन सकल, पत्री तुरत पठाय ॥

आपनकै तिनको दियो, निज निज थलन टिकाय ४६
 जेनहिं आये तिनहुँ सों, पठै सैन्य लै दंड ॥

निज वदि करि राख्यो तिनहिं, प्रगटत तेज अखंड ४७
 कोउ कोउ अपडरगये भगाई । ते सभीति दिल्लीमें जाई ॥
 बादशाह सों कियो पुकारा । पृथ्वीनाथ यक शत्रु अपारा ॥
 आय प्राग लिय अमलि उदंडा । वरियाई लिय सबसों दंडा ॥

सुनि कह शाह कौन सो क्षत्री । कहँते आवतभो वरअत्री ॥
शासन सुनत शाहको तेजन । हाथजोरि विनतीकीतेहिशन ॥
सो सूबा है जाति बघेला । कानन सुन्यो महीप नवेला ॥
शाह कह्यो बघेल क्षत्री कहँ । सुन्यो आजुलों नहि कानन महँ ॥
अस कहि बड़ी सैन्य लै शाहा । गमनत भयो भरे उत्साहा ॥

दोहा—बीच बीच मग वास करि, चित्रकूटमें आय ॥

शाह कियो डेरा सुन्यो, सो विरसिंह नृपराय ॥ ४८ ॥

छंद—सुत वीरभानु बोलाय, कह सकल सैन्य सजाय ॥

चलि लेइ आगू ताहि, चख लखै को धौं आहि ॥ १ ॥

सुनि वीरभानु सुवैन, कह तात तुम युत चैन ॥

वसि करहु सेवन प्राग, हरिभजहु युत अनुराग ॥ २ ॥

तब कह्यो विरसिंह देव, चलि हमहुँ लैव भेव ॥

अस भाषि सोये दोउ, निज शिविरगे सबकोउ ॥ ३ ॥

पुनि प्रात सूर उदोत, करि मज्जनै सुख सोत ॥

हरिपूजि दै बहु दान, सुत सहित कियो पयान ॥ ४ ॥

सँग सवा लाख सवार, गज त्योंहिं अमित तयार ॥

बहु सुतर प्यादे यूह, कवि को कहै करि ऊह ॥ ५ ॥

हय सुरंगह्वै असवार, विरसिंह भूप कुमार ॥

शिर कूंड कवचे धारि, कर कुंतलै तरवारि ॥ ६ ॥

इमि वीरभानु तयार, ह्वै चलयो सैन्य मँझार ॥

वजि रहे वृंद निशान, रहे फहरि विपुल निशान ॥ ७ ॥

विरसिंह भूप अनूप, मनु वीररसको रूप ॥

चढ़िकै उत्तंग मतंग, द्रुत चलयो त्यों सउमंग ॥ ८ ॥

सँग चलीसैन्य विशाल, सेनप लसे सम काल ॥

सुत सहित सैन समेत, विरसिंह नृप सुख सेत ॥ ९ ॥

नियरान चित्रहिक्कट, तब सुन्यो शाह अटूट ॥
 निज फौज दियो निदेश, तहँ भै तयारी वेस ॥ १० ॥
 पयस्वनी सरिके पार, विरसिंह भूप उदार ॥
 जब गयो हलकारान, किय विनय जोरे पान ॥ ११ ॥
 सुनु खोदावंद हवाल, बड़ी सैन्य आवति हाल ॥
 सुनि बादशाह उमाह, भरिबैठ तरुतहि माह ॥ १२ ॥
 विरसिंहदेव भुवाल, गजते उतरि तेहि काल ॥
 ढिग शाह चलि अभिराम, बहुभांति कियो सलाम १३ ॥
 समभानु पुनि विरभान, हयको उवाटि महान ॥
 गजमस्त कै परजाय, बैठत भयो सुख छाया ॥ १४ ॥
 लाखि साह तब हरषाय, तेहि तुरत निकट बोलाय ॥
 लिय तरुत में बैठाय, बहु विधि सराहि सुभाय ॥ १५ ॥
 पुनि कह्यो बाँकेवीर, तुम सम ननिडर सुधीर ॥
 तुम कहँके अहौ नरेश, काहे चल्यो परदेश ॥ १६ ॥

सोरठा—केहि कारण मम देश, लूट्यो सो नहिं नीक किय ॥

शाह वचन सुनि वेस, वीरभानु बोलत भयो ॥ १७ ॥

हम क्षत्री वघेल हैं रूरे । वासी थल गुजरातहि केरे ॥
 आप हमारे हैं सति स्वामी । हम चाकर राउर अनुगामी ॥
 निज करतव देखायवे काहीं । आये हम यहि देशहिं माहीं ॥
 जोरिपुता करि हमको मारयो । ताको हमहूँ सपदि सँहारयो ॥
 तुव देश हिको द्रव्य न खायो । निज कोषहिको वित्त उठायो ॥
 जो नृप हमको तेज देखायो । ताहि दंडदै फेरि बसायो ॥
 सो आपहिकी बढिकरि दीन्ह्यो । वृथाकोप हमपर प्रभु कीन्ह्यो ॥
 यह सुनि बादशाह कहवानी । यहि बालक की बुद्धि महानी ॥

दोहा—पुनि कह विरसिंह देवसों, तुव सुत बड़ो निशंक ॥

रणरिपुगण जीतन प्रबल, वीर धीर अतिबंक ॥५०॥

छंदहरिगीतिका—तुव पूत बड़ो सुपूत हैहे वंशतिहरे माहिं ॥

नृप द्वादशैको भूप होई अचल भूमिसदाहिं ॥

यह भाषि शाह उछाह भरि वारहोंनृपकी राजि ॥

दियवखशिसादर नानकारहि कह्यो भाई भ्राजि ॥

गिरि विंधि बाँधव दुर्गके तुम ईश होहु प्रसिद्ध ॥

नृप सकल महिके करहि सेवा होयसिद्धि समृद्ध ॥

लिखिदियो विरसिंहदेवको पुनि भूप शाहसमेत ॥

चलि प्राग करि स्नान दिय बहुदान द्विजनसचेत ॥

तहँ भूप बहु सन्मानकरि कीन्ह्योनिमंत्रण शाह ॥

पुनि साह द्विल्लीको गयो प्रागहि वस्यो नरनाह ॥

विरसिंहदेव विवाह किय सुत वीर भानुहिंकेर ॥

सब ज़मीदारनको निमंत्रण दियो आये ढेर ॥ ३ ॥

दिय दान द्विजन महानयुत सन्मान मोद अमान ॥

सरसान सकल जहान बिच किय गायकन बहुगान ॥

गज बाजि धन मणिमाल वसन विशाल दै सब काह ॥

करि मान किय सबकी विदा विरसिंह सहित उछाह ॥

दोहा—ज़मींदार निज निज सदन, जातभये हर्षाय ॥

त्योही याचक गुणीजन, गये अमित धन पाय ॥५१॥

करिकै सविधि क्रिया पितु केरी। विरसिंहदेव द्विजन बहु हेरी ॥

विविध विधान दान बहु दीन्ह्यो। युत सन्मान विदा बहु कीन्ह्यो ॥

कछु वासर करि वास प्रयागा। विरसिंहदेव भूप बड़ भागा ॥

बोलि ज्योतिषिन सुदिन शोधाई। चकरनको चाकरी देवाई ॥

करि खातिरी कह्यो तिनपाहीं। कालिह सुदिन हमरो सुख माहीं ॥

चलो सबै बांधव गढ़ देखी । सुनत वीर है सयुग विशेषी ॥
 कहे नाथ भल कीन सलाहा । हमरे उर महान उत्साहा ॥
 पुनि विरसिंहदेव मुद भरि कै । वीरभानु युत मज्जन करि कै ॥

दोहा—वेणीमे बहु दान दै, युत सन्मान द्विजान ॥

लै संग सैन्य पयान किय, विपुल बजाय निसान ५२॥

कवित्त—सोहत सवाव लाख संगमें सवार लोने युग लाख पै-
 दरहु गौने जासु साथमें ॥ वेशुमारगज त्योंहीं सुतर अपार राजे
 योहीं कूँच करि भरे आनंदके गाथमें ॥ विच विच पंथ वास
 करि बांधवदुर्ग पास आय नीचे डेरा कियो धारे अस्त्रहाथमें ॥
 विरसिंहदेव जाय लषणकी पूजा तहां करि सविधान धान्यो पद
 जल माथमें ॥ १ ॥

सवैया—सादर साधुन विप्रनको नृप छिप्र भली विधि बोलिजेवा
 यो॥ फेरिसवै ज़मादारन औ भुमियानको आपने पास बोलायो॥
 ते सब आय सलाम किये दिये भेट कह्यो नृप वैन सोहायो ॥
 डेरा करो सब जाय सुखी दियो दण्ड तेहीं जो बोलाये न आयो२

दोहा—साँझ समय दरबारको, सादर सबहिं बोलाय ॥

कहरैयत तुम शाहकै, सुनहु सबै चित लाय ॥५३॥

कवित्त—शाह यह राज्य हमें दियोहै उछाह भरि प्रथम सप्रीति
 वैन सबसों वखानैहैं ॥ रीति या बघेलवंशकी है क्रोध ठानै ना-
 हिं येतेहुँपै कोई जो न हुकुमको मानैहैं ॥ युद्ध करिवेको जो
 तयार होत ताको हम बाधहीहैं क्रुद्ध हैंक आसनको ठानैहैं ॥
 ऐसे अवनीशवैन सुनि सुनि शीशनाय कहे हम रावरेके रैयत
 प्रमानैहैं ॥ १॥

सोरठा—ईश्वर आप हमार, हम सेवक हैं रावरे ॥

सुनि गढ़भूप उदार, आयो विरसिंहदेव ढिग॥५४॥

कवित्त-तेग धरि आगे विनय कियो अहैं बाल हम आपहैं ह-
मारे पिता पालैं प्रीति ठानिकै ॥ सुनि विरसिंहदेव बाहैं गहि पु-
त्र कहि लीन्ह्यो बैठाय उर महामोद मानिकै ॥ कह्यो पुनि तूतो
वीरभानुके समान भेरे कह्यो पुनि सोऊ पाणि जोरि सुख सा-
निकै ॥ महाराज किला चलि बैठैं राज्य आसनमें करों सोई दी-
जिये निदेश दास जानिकै ॥ १ ॥

दोहा-सुनत वयन विरसिंह नृप, बोलि ज्योतिपिन काह ॥

सुदिन शोधि गुरु साधु द्विज, आगे करि सउछाह ५५

चल्यो निसान वजायकरि, जायदुर्ग भरि चाय ॥

द्वारपालको देतभो, बहु इनाम बोलवाय ॥ ५६ ॥

पूजा करि सब सुरनकी, अति आदर युत भूप ॥

विप्रनं साधुनको कियो, निवता महाअनूप ॥ ५७ ॥

बाजन बाजे विविध प्रकारा । तोपैं छूटतभई अपारा ॥

सुदिन शोधिसिंहासन पाहीं । विरसिंह भूप बैठ सुखमाहीं ॥

जमीदार भूमियन बोलई । विदा कियो दै तिन्हैं विदाई ॥

रैयत साहु महाजन जेते । आयभेंट दिय नति करि तेते ॥

शिरोपाउदै तिन सब काहीं । खातिर करि किय विदा तहांहीं ॥

राज्य करत बहु वर्ष विताये । वीरभानु सुतयुत अति चाये ॥

नृप विरसिंहदेव यक वासर । कीन्ह्यो मन विचार यह सुखकरा ॥

सुतहिं समर्पि राज्य यह सिगरी । भजन करों चलि नहिं अब विगरी ॥

दोहा-बोलि साधु गुरुको सपादे, सुदिन शोधि नरराय ॥

वीरभानुको शुभ दिवश, दिय गद्दी बैठाय ॥ ५८ ॥

आप भजन करिवेके हेतू । मणिदै रानी सहित सचेतू ॥

विरसिंहदेव प्रागभे आई । वास कियो तिरवेणि नहाई ॥

दिनप्रति ब्राह्मण साधुन काहीं । भोजन करवावै सुखमाहीं ॥

आनंद मग्न रहै वसुयामा । सुमिरण करत जानकी रामा ॥
 वीरभानु बांधवगढ़में इत । पैठि राज्य आसन मन प्रमुदित ॥
 राज्य कियो बहु दिवश समाजा । तासु सुवन तुमराज विराजा ॥
 करहु निशंक राज्य सब काला । यह सुनि राजाराम निहाला ॥
 बहु विधि स्तुति करिकै मेरी । मोसों विनती करि बहुतेरी ॥
 दोहा—कह कवीर साहेब गुरु, तुम हमरे कुलकेर ॥

शिष्य कीजिये मोहिं प्रभु, अब न कीजिये देर ॥५९॥
 यह सुनि तब मैं अति हर्षाई । राजारामहिं कह्यो बुझाई ॥
 त्वहै तुम्हरे दशयें वंसा । परमप्रकाशमान एक हंसा ॥
 कथिहै सो मुख अनुभव वानी । मोर शब्द गहिहै सुखमानी ॥
 सोई तुव कुलको अवतंसा । विजक ग्रंथको करी प्रशंसा ॥
 ताको अर्थ अनूपम करिहै । मम आश्रमहिं आय सुख भरिहै ॥
 यह सुनि रामभूष शिरनाई । करि प्रशंसा जनन सुनाई ॥
 नंदपुराणिक तहँ सुख भीनी । करि दंडवत वंदना कीनी ॥
 राजाराम महलमें जाई । रानीसों सब गयो जनाई ॥

दोहा—रानी सुवचन कुवैरिसों, किय यह विनय ललाम ॥

श्रीगुरुको लै आइये, महाराज निज धाम ॥ ६० ॥

श्रीकवीर गुरुको मुदित, सादर रामभुवाल ॥

लैआये निज भवनमें, करि बहु विनय रसाल ॥६१॥

कवित्त—रहै जहाँ आसन तहाँई श्रीकवीरजीको गुफा वन-
 वायो प्रीतियुत राजारामहै । साज मँगवाय सब चौकाकै कवीर
 शिष्य राजा अरु रानिहूँको कीन्ह्यो तेहिं ठामहै । औरो सब भूपं-
 के समीपी भये शिष्य सुखी पूजा जौन चढ़्यो तहां अगणित
 दामहैं । दियो भंडारा श्रीकवीर वोलि साधुनको जय जय-
 रह्यो पूरि बांधवगढ़ धाम धामहै ॥ १ ॥

दोहा—युगल गाँउ अरुगाँउ प्रति,रूपयाएक चढ़ाइ ॥

दिय कागज लिखवायकै,रामभूप हर्षाय ॥ ६२ ॥

होय जो हमरे वंशमें,भूपति कोउ उदार ॥

लेय न कवहूँ शपथ तेहि,अर्पन कियो हमार ॥६३॥

श्रीकवीरजी है प्रसन्न अति । त्रिकालज्ञ पुनि कह्यो महामति॥

औरहु कछु भविष्य में भाखों । सो तुम सति निज मन गुणिराखो

दशयें वंश हंसको रूपा । तुमहीं प्रगट होहुगे भूपा ॥

सुवचन कुवँरि रानि तुव जोई । सो परिहार भूप घरहोई ॥

तोसों तासु होयगो व्याहा । हरिपद रति अति करो उछाहा॥

ताके वीरभद्र सुत तेरो । जन्मिदेयगो मोद घनेरो ॥

सो तेहिते इग्यरहौ वंशा । होइहै नृपनमाहँ अवतंशा ॥

विच विच और भूप जेहँहैं । ते हरिभक्ति हीन हैजैहैं ॥

दोहा—ब्रह्मतेजते तपित अति, ह्वह कोउ नरेश ॥

तजि यह बांधव दुर्ग को, वसिहै औरे देश ॥ ६४ ॥

ते सब भूपन को जस नामा । शिष्य मोर लिखिहैं अभिरामा ॥

दशौ वंश तुव अंतहिकाला । संत वेषदै दरश विशाला ॥

तोको रामधाम लैजैहों । आवागमन रहित करिदैहों ॥

अस कहि श्रीकवीर भगवाना । परमधामको कियो पयाना ॥

श्रीकवीरके शिष्य सुजाना । धर्मदास भे विदित जहाना ॥

तिनके शिष्य प्रशिष्य घनेरे । लिखे जे औरहुँ भूप बड़ेरे ॥

तिनको नाम सुयश परतापा । कहिहों मैं सुखमानि अमापा ॥

कह्यो पूर्व जो संत कवीरा । वीरभानु नृप भो मतिधीरा ॥

दोहा—राम भूप सुत तासु भो, इन दूनों करवूति ॥

प्रथम कछुक वर्णन करौं, जग प्रसिद्धमजबूति ॥६५॥

दिछी रह्यो हुमायूं शाहा । मान्यो हुकुम सकल नरनाहा ॥

शेरशाह दिल्लीमें आई । दियो हुमायूं शाह भगाई ॥
 दिल्लीमें करि अमल सुहायो । सदल आपनो अदल चलायो ॥
 शाह हुमायूं वेगमकाहीं । गर्भवती सुनिकै श्रुतिमाहीं ॥
 नरहरि महापात्र लिय मांगी । सब भूपन ढिगगे सुख पागी ॥
 राख्यो नहिं कोउ भूपति ताहीं । आयो वीरभानु ढिग माहीं ॥
 वीरभानु तेहिं भगिनी भाखी । पाटन शहर देतभो राखी ॥
 वेगम सो दिल्लीपति जायो । अकबर शाह नामसो पायो ॥

दोहा—आई बाधा नगरमें, शेरशाह की सैन ॥

वीरभानु नृपसों कहे, लखि आये जे नैन ॥ ६६ ॥

तहँते नृपति पयान करि, बांधवगढ़गो धाय ॥

शेरशाह लिय छेंकि तेहिं, अमित सैन्य लै आय ६७ ॥

छेंके रह्यो वर्ष सो वारा । खायो बोयो आम अपारा ॥

दुर्ग अटूट मानि सो हारा । लै सब सैना सपदि सिधारा ॥

वीरभानु वरवीर नरेशा । छीनिलियो दल लै निज देशा ॥

लै विलायती दल निज संग । चलो हुमायूं सहित उमंगा ॥

इत अकबर यक दिवश उचारा । सुनिये बांधवनाह उदारा ॥

भाई रामसिंह संग माहीं । बैठतहौ नित भोजन काहीं ॥

हमको क्यों बैठावत नाहीं । नृप कह आप खामिदै आहीं ॥

पूछिलेहु मातासों जाई । पूछ्यो सो सब दियो बताई ॥

दोहा—खड्गचर्म लै हाथमें, सुनि अकबर सो हाल ॥

चल्यो कियो तिन संगमें, वीरभानु निज बाल ६८ ॥

अकबरसों तहँ राम कह, कोस कोस करि वास ॥

चलिये दिल्लीनगरको, जुरै फौज अनयास ॥ ६९ ॥

जुरी चमू चतुरंग संग, अमित तुरंग मतंग ॥

रंगो रामसिंह जंगके, रंग अभंग उमंग ॥ ७० ॥

नातनको लिखवायो पाती । चारो नृप आये मुदमाती ॥
 तिन सँग रामसिंह यशवाला । जातभयो भो जंग विशाला ॥
 हन्योशेरको तहाँ हुमाऊ । दिल्ली तख्त बैठ युत चारु ॥
 इतै सुलेमै राम सँहारी । दिल्लीको द्रुत गयो सिधारी ॥
 ताकन तनय हेतु सुखधारी । चढ्यो हुमायूँ अँचि अटारी ॥
 मोद मगनसों गिरिगो नीचै । होत भयो तुरंत वश मीचै ॥
 तनय हुमायूँ अकबर काहीं । बैठायो तव तख्तहि माहीं ॥
 वीरभानु जब तज्यो शरीरा । रामसिंह नृप भो मतिधीरा ॥

दोहा—दिल्लीको पुाने राम नृप, गये अकबर शाह ॥

कीन्ह्यो अति सन्मानसो, अकस मानि नरनाह ॥७१॥
 औचक मारनको गये, ते नृप रामहि काहँ ॥
 फिरे मानि विस्मय सबै, निरखि चारु चौवाहँ ॥७२॥
 नापितसेन स्वरूप धरि, हरि जिनके तनु माहिँ ॥
 तेल लगायो राम सो, कहियेकेहिँ नृप काहिँ ॥७३॥
 वीरभद्र तेहि सुत भयो, वीरभद्र कर संत ॥
 आगे वणौँ औरहु, भये जे नृप मतिवंत ॥ ७४ ॥
 वीरभद्र सुत विक्रमा—दित्य भयो अबदात ॥
 नामहिँके अनुगुन भयो, जेहिँ गुण जग विख्यात ७५॥
 लीन्ह्यो जायरिझाय जो, निज करतूतिहिमाहिँ ॥
 ब्रह्मके मारे मरिलह्यो, सोन देव पुर काहिँ ॥ ७६ ॥
 अमरसिंह ताको सुवन, सरिस अमरपति भोज ॥
 रीवाँ रजधानी करी, सीवाँ यश अरु वोज ॥७७॥
 दिल्लीको गमनत भयो, चुक्यो खर्च मग माहिँ ॥
 लूटि दौलताबादको, गयो शाह ढिग पाहिँ ॥ ७८ ॥
 उमरावन चुगुली करी, शाह निकट द्रुत जाय ॥

बादशाह मान्यो नहीं, नृप पै खुशी बनाय ॥ ७९ ॥
 अमरसिंह भूपालके, भो अनूपसिंह भूप ॥
 भूपर जासु प्रताप यश, छायो परम अनूप ॥ ८० ॥
 भावसिंह ताको तनय, भयो भानु सम भास ॥
 दाता ज्ञाता वीरवर, ज्ञाता बुद्धि विलास ॥ ८१ ॥
 जगन्नाथजी जायकै, मूर्ति लाय जगनाथ ॥
 थापिव्यासके ग्रंथको, संच्यो भरि सुख गाथ ॥ ८२ ॥
 राना घरमें व्याह भो, तहँते मूरति दोय ॥
 लाये सरस्वति गरुड़की, थापित किय मुदमोय ८३ ॥
 विप्रन दान महानदै, कीन्हे बहु सन्मान ॥
 तिनके भे अनिरुद्ध सिंह, भूपति परम सुजान ॥ ८४ ॥
 ताके भो अवधूतसिंह, जाहिर दान जहान ॥
 ताके सुवन अजीतसिंह, दुवन अजीत महान ॥ ८५ ॥
 जाके गौहरशाह बसि, जायो अकबर शाह ॥
 सैन्य साजि जोहिं तरुतमें, बैठावत नरनाह ॥ ८६ ॥
 जाजमऊलों जायकै, दिछी दियो पठाय ॥
 अँगरेजहुँ अठवर्नको, दीन्ह्यो जंगभगाय ॥ ८७ ॥
 तासु तनय जयसिंहभो, जयमें सिंह समान ॥
 जाहिर दान कृपानमें, भक्तिवान भगवान ॥ ८८ ॥
 दशहजार असवार लै, पूनाको हारोल ॥
 आवतभो यशवंत तेहिं, हत्यो प्रताप अतो ल ॥ ८९ ॥
 गहरवार करि गर्व बहु, लीन्हे देश दबाय ॥
 तिनको मारि भगाय दिय, बचे ते गिरिन लुकाय ९० ॥
 देश आपने अमल करि, दै विप्रन बहु दान ॥
 अंत समय तनु प्राग तजि, हरिपुर कियो पयान ९१ ॥

विश्वनाथ नरनाथभो, तासु तनय यशगाथ ॥
 रति अनन्य सियनाथपै, भई जासु महिमाथ ॥ ९२ ॥
 सरि सर घर घर पुर पथन, छयो राम गुणगाथ ॥
 कितो परिक्षित कै कियो, कलि कृतयुग विङ्गनाथ ॥ ९३ ॥
 तासुतनय रघुराज भो, महाराज शिरताज ॥
 राजत राज समाज मधि, जाको सुयश दराज ॥ ९४ ॥
 श्रीकबीरजी कथित यह, है विचित्र नृप वंश ॥
 नहिं असत्य मानै कोऊ, जानि संत अवतंश ॥ ९५ ॥
 सतयुगमें सत नाम रह, अरु मुनीन्द्र त्रेताहिं ॥
 करुणामय द्वापर रह्यो, अब कबीर कलि माहिं ॥ ९६ ॥

कवित्त—नृपति उदार केते भये अनुसार मति तिनके अपा
 र गुण यश कियो गानहै ॥ जनम करम भूप रघुराजको अनूप
 धरमको जूप दिव्य जाहिर जहानहै ॥ देख्यो निज नैन ताते
 भरो अति चैन उर करतहौं निज बैन सविधि बखानहै ॥ क-
 है युगलेश अहै झूठको नलेस कहूं मानिहै विशेष सांच सोई
 बड़ो जान है ॥ १ ॥

छंद—कह्यो कबीर भविष्य राम नृप सुनि सुखराशी ॥
 हंसिनि सुवचन कुवैरि रानि तू हंस प्रकाशी ॥
 वीरभद्र तुव सुतहु हंस नित हरि ढिग वासी ॥
 गुणगंभीर अति वीर धीर यश सुयश विलासी ॥
 जब दशै वंश अवतंश नृप, प्रगट होयहै तू अवशि ॥
 तब सति परिहार नरेशकुल, जनमायह तुवतियहुलासि ॥
 दोहा—तासों तेरो होयगो, सुखप्रद प्रथम विवाह ॥
 वीरभद्र यह तेहि उदर, वंश इग्यरहे माह ॥ ९७ ॥
 जनमि देयगो तुमाहि अति, परमप्रमोद विख्यात ॥

तेजवंत क्षिति छाये है, यश अनंत अवदात ॥ ९८ ॥
 समय विजय करसिंहतो, भो जयसिंह भुआल ॥
 गंगलियो अगवान जेहि, तनु त्यागनके काल ॥ ९९ ॥
 प्रगट भयो ताके तनय, हंस जो कह्यो कबीर ॥
 विश्वनाथ तेहि नामभो, परमयशी रणधीर ॥ १०० ॥
 रघुपति भक्त अनन्य अति, अरु ब्रह्मण्य शरन्य ॥
 अग्रगण्य क्षिति नृपनमें, तेग त्याग जेहि धन्य ॥ १ ॥
 तेहि आह्निक गुण तेज यश, औरहु अमित चरित्र ॥
 मैं विचित्र वर्णन कियो, ग्रंथ सोपरमपवित्र ॥ २ ॥
 देखहि श्रद्धावान जे, होवैं मनुज सुजान ॥
 औरहु करहुँ वखान कछु, निजमतिके अनुमान ॥ ३ ॥
 रानी सुवचन कुँवरिभै, पुरी उचहरा माहि ॥
 सुता भई शिवराज नृप, व्याहिगई तेहि काहि ॥ ४ ॥
 पढ्यो भागवत ताहिमे, दृढ़ भो तेहि विश्वास ॥
 गुण यश अनुपम तासुभे, किय जो कबीर प्रकाश ॥ ५ ॥
 विश्वनाथ नरनाथकी, तिय सों अति अभिराम ॥
 कुँवरि सुभद्र सुनाम जेहि, सरिस सुभद्रा आम ॥ ६ ॥
 छप्पय—वीरभद्र सुत रामभूपको हंस सुहायो ॥
 श्रीकवीर आगम निदेश निजग्रथहि गायो ॥
 विश्वनाथ तेहि तीय गर्भ जबते सो आयो ।
 तबते बाँधवदेश धर्म परमानंद छायो ॥
 कहूँ रह्यो न अधरम लेश क्षिति विन कलेश पुरजन भयो
 कलि वेश छयो कृतयुतधरम सतयुगलेशसो कहि दयो ॥
 दोहा—रीवा घर घर सब प्रजा, सुखभरि करत उचार ॥
 विश्वनाथके होय सुत, तौ धनि जन्म हमार ॥ ७ ॥

परमहंस जो ऋषभदेवसमाचतुरदास जेहि नाम शमन भ्रम ॥
 फिरतरहे रीवापुरमार्ही । रामभजनमें मग्य सदाही ॥
 डोलत मग औरहि मुखबोलैं । निज हियकोअंतर नहिखोलैं ॥
 वर्षाऋतु धारैं शिरवर्षा । जाडे जलमें वसैं सहर्षा ॥
 ग्रीष्म तपत उपलमें सोवैं । प्रेमते हँसैं कहूँ क्षण रोवैं ॥
 नृप रघुराज सुतासु चरित्रा । भक्तमालमे रच्यो पवित्रा ॥
 परमहंस सो सहज सुभाये । सुविश्वनाथ जन्मदिन आये ॥
 लगे बजावन मुदित नगारा । कहि मुख हंस लेतु अवतारा ॥

दोहा—यह हवाल जयसिंह नृप, सुनि सुनि त्यों पितु मात॥

क्षण क्षण अति हरषातभे, हियमें सो न समात॥ ८ ॥

अष्टादशसै असीको, साल सुकातिक मास ॥

कृष्णपक्ष तिथि चौथ शुभ, वासरदानि हुलास ॥ ९ ॥

वीरभद्र नृप हंसस्वरूपा । भयो भूप रघुराज अनूपा ॥
 कृष्णचंद्रको प्रिय अधिकारी । शर्मद धरा धर्म धुरधारी ॥
 नाम भागवतदास दुलारा । करहिं मातु पितु सदा उचारा ॥
 बालहिते भो ज्ञाननिधाना । भक्तिवान पूजक भगवाना ॥
 कछुदिनमें जननी मतिवारी । तनु तजि पुरवैकुंठ सिधारी ॥
 पिता पितामह निकट सकारे । लैनित जाहिं खेलावन वारे ॥
 तिनसों कहि कहि सुंदर वानी । कथै ज्ञान मानहु बड़ ज्ञानी ॥
 जगत शरीर अनित्यहि जानो । मरत सो जीव नित्य ध्रुव मानो ॥
 अजर अमर तेहि गावत वेदा । वृथा करत तेहि हित नरखेदा ॥

दोहा—सुनि सुनि कहे प्रसन्न मन, ते अति हिय हर्षात ॥

हैं ये पुरुष पुरानकोउ, पाल रूप दर्शात ॥ ११० ॥

कछु दिनमें पुनि जाय प्रयागा । नृप जयसिंह तुरत तनु त्यागा
 श्रीविश्वनाथ राज पद पायो । रघुराजहु युवराज कहायो ॥

रहे उर्मिलादास सुसंता । भक्त अनन्य उर्मिलाकंता ॥
 चलिं चलि तिनके आश्रम माहीं । दर्शन तिनको करै सदाहीं ॥
 मंत्र लेनको बड़े उमाहा । विनय कियो तिनसों सउछाहा ॥
 प्रभु मोहिं मंत्र कृपाकरिं दीजै । मेरो जन्म सफल जगकीजै ॥
 नाथ कह्यो तब अति हरषाई । मेरे रूप संत यक आई ॥
 देहैं तोहिं मंत्र सदुल्लासा । हैहै सिंगरे जगत् प्रकासा ॥
 दोहा—तोहिं देनको मंत्र मोहिं, है नहिं लखन नियोग ॥
 मेटिहै तुव भव सोग सोइ, ध्रुवलखिहै सब लोग ॥ ११ ॥
 छंद—स्वामि मुकुंदाचार्य्य शिष्य यक संत रह्यो अभिरामा ॥
 नाम जासु लक्ष्मी प्रपन्न ढिग विश्वनाथ निहकामा ॥
 मंत्र लेनकी इच्छा गुणि मन श्रीरघुराजहि केरो ॥
 भाषि गयो भूपतिसों निज गुरु भक्ति प्रभाव घनेरो १
 आश्रम परम मनोहर तिनको ब्रह्मशिला तट गंगा ॥
 प्रियादास जे गुरु आपके तिनको रह सतसंगा ॥
 भक्ति ग्रंथ पठे तिनके बहु वाल्मीकि रामायन ॥
 श्रीभागवत भागवत पूरे पढ़त निरंतर चायन ॥ २ ॥
 लायक गुरु विशेष होनते नरनायक सुत केरे ॥
 आयसु होय बोलिलै आऊँ ऐहैं विनती मेरे ॥
 विश्वनाथ कह आप सरिस शिष जिनके जगत सोहाहीं
 जो कहिसकै महामहिमा तिन कोहै अस महि माहीं ॥
 श्रीराना जमानसिंह जासों लियो मंत्र उपदेशू ॥
 ऐसे शिष्य आप जिनकेहैं तेतो संत विशेषू ॥
 जौलैं स्वामिहिं इतै न लावो तौलैं मम सुतकाहीं ॥
 भक्तिभेद तुमहीं दरशावो करि सुकृपा उरमाहीं ॥ ४ ॥
 पुनि सुत श्रीरघुराज नामको एक वाग लगवायो ॥

लक्ष्मण बाग सुनाम तासुको युत अनुराग धरायो ॥
 अति उत्तंग आयत विचित्र हरि मंदिर यक अभिरामा ॥
 निरखत प्रद मुद दाम जननको वनवायो तेहिं ठामा ५॥
 श्रीरघुराज सुदिवश माहँ पुनि उर उछाह अति धारी ॥
 थापित किय सिय राम लपणकी मूरति तहँ मनहारी ॥
 औरहु अमित देवको प्रमुदित सादर तहँ वैठायो ॥
 दान महान द्विजन दै संतन करि सत्कार सोहायो ॥६॥
 विश्वनाथ पितु पद शिरधारि पुनि विनय कियो कर जोरी ।
 पूरणभो प्रसाद यह तिहरे अब यह इच्छा मोरी ॥
 पठइय प्रभु लक्ष्मी प्रपन्नको ब्रह्मशिलामें जाई ॥ ७ ॥
 बोलिलै आवैं सपदि स्वामिको लेहु मंत्र हरषाई ॥
 वैन सुनत सुतके सचैन ह्वै विश्वनाथ नरनाथा ॥
 कह लक्ष्मी प्रपन्नसों सादर जोरे दोऊ हाथा ॥
 ब्रह्मशिला सुरसरि समीप जहँ स्वामि मुकुंदाचारी ॥
 वास करत तुम जाय आसु तहँ लावहु तिन्हें सुखारी ८॥
 दोहा—महाराज विश्वनाथके, सुनत वयन मुख पाय ॥

हुत लक्ष्मीपरपन्न तब, ब्रह्मशिलागो धाय ॥ १२ ॥
 प्रभु ठिग चलि करि दंड प्रणामा । कुशल पूँछि पायो मुखधामा ॥
 विनय कियो पुनि दोउ कर जोरी । पुरवहु नाथ कामना मोरी ॥
 बांधवेश विश्वनाथ नरेशा । रीवां रजधानी जेहिं वेशा ॥
 राम अनन्य भक्त जगवीनो । राम परत्तु ग्रंथ बहु कीनो ॥
 प्रियादास भे संत महाना । तासु शिष्य सो विदित जहाना ॥
 भक्ति ग्रंथ ते बहुत बनाये । ते सब आप वदन निज गाये ॥
 सो विश्वनाथ तनय मतिवाना । है रघुराजसिंह जग जाना ॥
 आप सों मंत्र लेनके हेतू । कीन्हे प्रण मन कृपानिकेतू ॥

दोहा—ताहि समाश्रय कीजिये, चलि रीवांमें नाथ ॥

प्रभु कह मैं नहिं जाहुँ कहूँ, तजि तट सुरसरि पाथ १३
यह थल जो विहाय उत जैहौं । तौ अब परममोद नहिं पैहौं ॥
किय पुनि विनय सेव बहु ठानी।नाथ कह्यो पुनि सोई वानी
सुनि लक्ष्मीप्रपन्न पुनि बोल्यो । निज अंतरको अंतर खोल्यो ॥
जो प्रभु रीवानगर न जैहैं । तौ सति मोहिं जिवत नहिं पैहैं ॥
सुनिहँसिकै कह दीनदयाला । जो अस तेरो अहै हवाला ॥
तौ अब आसु सुदिवश विचारी । तहां जानकी करैं तयारी ॥
सुनि लक्ष्मी प्रपन्न हरषाई । गणक बोलि द्रुत सुदिन शोधाई ॥
सादर प्रभुसों वचन वखाना । सुदिन आजु भल करिय पयाना ॥

दोहा—सुनत बयन प्रिय शिष्य बहु, ले संग संत अपार ॥

रीवांको गमनत भये, प्रभु हरि प्रेम अगार ॥ १४ ॥
म्यानामें प्रभु मध्य सोहाहीं । संत अनंत लसैं चहुँ चार्हीं ॥
रामकृष्ण हरिमुख उच्चारत । चहुँ ओरसों सोरपसारत ॥
जात जहां जहँ प्रभु पुर ग्रामा । होत तहां तहँ शुचिजन ग्रामा ॥
यहि विधि आय स्वामि सुख छाकी।रीवां रह्यो कोस त्रय बांकी ॥
सुनि सुत युत नृप आगू लन्ह्यो।हरिसम बहु सत्कारहि कीन्ह्यो ॥
पुनि रीवाहिं लायो युत रागा । वास देवायो लछिमन बागा ॥
मंदिर निरखि मुकुंदाचारी । कह्यो रच्यो भल मंदिर भारी ॥
कछु वासर करिकै सुख वासा । पुनि मष ठान्यो कृपानिवासा ॥

दोहा—रंभ खम्भ गड़वाय करि, हरिमनु द्विजनजपाय ॥

सुदिन सोधाय सचाय प्रभु, अति उत्सव सरसाय १५
विश्वनाथ नरनाथ समेतू । बोलि कुवैर रघुराज सचेतू ॥
नारायण मनु किय उपदेशा।हरचो सकल कलिकलुष कलेशा ॥
भई समाश्रय तासु तिया सब । पूरि रह्यो पुर पर प्रमोद तब ॥

तीरथ चित्रकूट जे नाना । तहां पठै करि द्रव्य महाना ॥
सविधि कियो साधुन सत्कारा । ते सब जय जय किये अपारा ॥
लियो मंत्र जवते युत प्रीती । तवते चलन लग्यो यह रीती ॥
दोहा—पाठ गजेंद्रहि मोक्ष अरु, मूल रामायण ख्यात ॥

करि नारायण कवचको, पाठ उठै परभात ॥ १६ ॥
पंडित जे नव कृष्ण निवेरे । वसनहार कलकत्ता केरे ॥
तिनहिं लाटसों कहि बोलवायो । विश्वनाथ नरनाथ सोहायो ॥
सौंपिदियो निज सुत रघुराजै । विद्या सुखद पढ़ावन काजै ॥
तिनसों श्रीरघुराज सुजाना । अंगरेजी पढ़ि बहु सुख माना ॥
मुग्धबोध व्याकरण विशाला । पुनि पढ़ि लियो थोरहीं काला ॥
फेरि अयोध्यावासि महंता । जग जाहिर रामानुज संता ॥
सौंप्योतिन्हें पढ़ावन हेतू । नृप विश्वनाथ धर्मको सेतू ॥
तिनसों वाल्मीकि रामायन । श्रीरघुराज पढ़्यो अति चायन ॥

दोहा—सवालाख श्लोक जेहिं, महाभार्त विख्यात ॥

विन श्रम ताको पढ़ि लियो, कहि सबसों हरषात १७
करि मज्जन विधियुत श्रीकंता । पूजन ठानि रोज सुखवंता ॥
वाल्मीकि रामायण सादर । श्रीभागवत सुनावत सुखकर ॥
वाल्मीकि भागवत विशोका । प्रति अध्याय जिते श्लोका ॥
जेहिं आगे श्लोक जो होई । पूछे बुधहि बतावत सोई ॥
महाभारतमें जे इतिहासा । ते पुस्तक विन करत प्रकासा ॥
अस सब भांति अलौकिक करणी । श्रीरघुराज केरि कवि वरणी
गति जो कविता रचन नवीनी । वाल्हिते विरंचि तेहिं दीनी ॥
संस्कृत और भाषहू केरी । कविता बहु विधि रची घनेरी ॥
दोहा—विनयमालको प्रथम रचि, रुक्मिणि परिनय फेरि ॥

पितुहि सुनायो ते भये, अति प्रसन्न मुख ढेरि ॥ १८ ॥

चित्रकूट गमनत भये, एक समय रघुराज ॥
 रच्यो तहां सुंदर शतक, हनुमतचरित दराज ॥ १९ ॥
 जो कोउ वांचत पत्रिका, देखि पिठौता तासु ॥
 वांचि आसु सबसों कहत, सुनि सब लहत हुलासु १२० ॥
 लिखन शक्ति लिखिनाथकी, विदित लिखारी जोउ ॥
 दीखन नृप अस चखन कहि, सिखन चहतहै सोउ २१ ॥
 कहूं चढ़ैती तुरंगकी, दरशावत सबकाहिं ॥
 कहूं मतंग सवारहै, सुरपाति सरिस सोहाहिं ॥ २२ ॥
 कहूं दुनाली धनुष लै, गोली तीर चलाय ॥
 हनै निसाना रोपिकै, तुरतहि देहिं गिराय ॥ २३ ॥
 कहूं तेगको घालिकै, करहिं टूक चौरंग ॥
 सुनि लखि पितु विशुनाथ नृप, होत मनहिं मन दंग २४ ॥
 कहूं वन जाय अहेरको, मारिशोर वनजीव ॥
 देखरावाहिं निज तातको, होहिं ते खुशी अतीव ॥ २५ ॥
 बहु वनराजनको हन्यो, वनहिं सिंह रघुराज ॥
 ते दराज विस्तर भयहि, वरण्यो नहीं समाज ॥ २६ ॥

कवित्त—एक समय राना श्रीजमानसिंह हिंद भान गया
 करिवेको कीन्ह्यो देश या पयानहै ॥ जायविश्वनाथ चित्रकूट
 मुलाकात करि रींवहि लेवायलाये करि सन्मानहै ॥ भाई लछि-
 मनसिंह कन्या तिन्हें व्याहि दीन्ह्यो चीन्ह्यो विश्वनाथै भलो
 भक्त भगवानहै ॥ तासु सुत रघुराज तिलक चढायआसु जात-
 भे हुलास भरि उदैपुर थानहै ॥ १ ॥

दोहा—कछु दिन माहि जमानसिंह, गे वैकुंठ सिधारि ॥
 रानाभो सरदारसिंह, तेउगे स्वर्ग पधारि ॥ २७ ॥
 भूपति भयो स्वरूपसिंह, तेग त्याग समरथ्य ॥

राज काजमे निपुण अति, चलयो सुनीति सुपथ्य२८
 निज भर्गिनिनिके व्याह हित, करि सँदेह मनमाह ॥
 श्रीरघुराज सलाह करि, चलि ढिग पितु नरनाहर२९॥
 महापात्र अजवेशको, खतलिखाय यहि भांति ॥
 पठयो वेगि उदयपुरै, नृप सुत अति मुदमाति १३०॥
 आपसयान सुजान सुठि, को करिसकै वखान ॥
 जहँकीजै अनुमान तहँ, हमहिँ प्रमाण न आन ॥३१॥
 विश्वनाथ नरनाथ अरु, युवराजहु रघुराज ॥
 वरनिदेशअजवेश लहि, सुकाविनको शिरताज ॥३२॥

सवैया—चैन भरो चलयो ऐनते वेगि गयो अजवेश उदैपुर
 माहीं॥ राना स्वरूप अनूप जो भूप सुन्यो श्रुति आयो इते तेहिं
 काहीं ॥ सादर बोलि सुप्रेमते क्षेमको पूँछि कह्यो ढिग वैठो इहां-
 हीं॥ बैठि स्वनाथको पत्रसो हाथ दियो लिय माथते धारि
 तहांहीं ॥ १ ॥

दोहा—श्रीस्वरूप राना सुवर, सुनि हवाल खत केर ॥

कह्यो सुकवि अजवेश सों, लहि प्रमोद उर ढेर॥३३॥
 लिख्यो जो सुता व्याहके हेतू । सो हम अवशि बांधिहैं नेतू ॥
 पै राना जमानसिंह रूरे । गया करनगे जब सुख पूरे ॥
 तब रींवा गवने सउछाहा । तिनको तहां होत भो व्याहा॥
 राजकुवँर रघुराज सुहायो । ताको तहँ ते तिलक चढ़ायो ॥
 वीतिगये बहु दिवश सुजाना । इतको ते नहिं कियो पयाना ॥
 सो अब ऐसी करहु उपाई । जाते इहौ वहौ सधिजाई ॥
 महापात्र आपहु लिखि पाती । पठवहु द्रुत आवहिं जेहिं भाती ।
 हमहु लिखावतहँ खत आसू । आवहिं राजकुवँर सहुलासू ॥

दोहा—काज होय रघुराज इत, हमरहु कारज होय ॥

जहँ को संमत देहिंगे, तहँको करबै सोय ॥ ३४ ॥

महापात्र सुनि भल कहि दीन्ह्यो। नाथ विचार भलो यह कीन्ह्यो
अस कहि वेगि सुकवि अजवेशा। पत्र लिखतभो इतको वेशा ॥
रानहु इतको खत लिखवायो। बोलि पठायोसो इत आयो ॥
खत सुनि विश्वनाथ नरनाथा। सुतसों कह्यो मानि सुख गाथा ॥
रानाको यह खत सुनिलेहू। लियो सो करहु वेगि युत नेहू ॥
तब रघुराजहु खत सुनि सोई। कहत भयो पितुसों मुद मोई ॥
यह हवाल मैं सब सुनि लीन्ह्यो। मोहिं बोलावनको लिखि दीन्ह्यो ॥
सो जस प्रभु मोहिं देहिं रजाई। सोइ करो सोइ नीक जनाई ॥

दोहा—विश्वनाथ नरनाथ तब, कह्यो भरे उत्साह ॥

जाहु उदयपुर व्याह हित, मेरो इहै सलाह ॥ ३५ ॥

बोलि ज्योतिषिन तुरत पुनि, गमनन सुदिन बनाय ॥

कह्यो सुवनसों यह भली, साइत दियो बताय ॥ ३६ ॥

सुनि रघुराज कह्यो हर्षाई। दीजै सब तदबीर कराई ॥
कौन देवान जान सँग योगू। ताकहँ दीजै नाथ नियोगू ॥
कौन कौन सरदार सुजाना। मेरे सँगमें कराहिं पयाना ॥
नाथ कृपा करि सादर सोई। देहिंवताय सिद्धि सब होई ॥
भाष्यो महाराज सुख पाई। सभा सदनको सपदिसुनाई ॥
वीर धीर अरु होय उदारा। राज काजमें चतुर अपारा ॥
धर्मवान पूजक भगवाना। द्विज साधुनमें प्रीति महाना ॥
स्वामिहि मानै प्राण समाना। ये लक्षणहैं विदित देवाना ॥

दोहा—ते लक्षणयुत सांच अब, दीनबंधु तुव पास ॥

लेहुसाथ तिनको अवशि, तिनते सकल सुपास ॥ ३७ ॥

हैं सरदार सुजान सब सावधान तुव सेव ॥

तिनको सबको लेहु सँग, जे जानत रणभेव ॥ ३८ ॥

सुनि रघुराज जनकके बैना । दीनबंधु कहैं बोलि सचैना ॥

पुनि सरदारन निकट बोलाई । चतुरंगिणी चमू सजवाई ॥

सैनप दीनबंधुको करिकै । व्याह पोशाक किये सुखभरिकै ॥

बाजिरहे चहुँ ओर नगारा । वंदीजन वर विरद उचारा ॥

लहि रघुराज प्रमोद अपारा । भयो उत्तंग मतंग सवारा ॥

औरहु सखा वृद्ध सरदारा । चाढ़ि चाढ़ि हय गय रथनमँझारा ॥

हरि गुरु गणपति हनुमतकाहीं । सुमिरिसुमिरि सब निज मनमाहीं ॥

गहि गहि अस्त्र शस्त्र निजहाथा । गमनत भये सबै एक साथ ॥

दोहा—जे मगमें भूपति परे, तिनसों लहि सत्कार ॥

निकट उदैपुर जब गये, राना सुन्यो उदार ॥ ३९ ॥

कवित्त—करिकै पेसवाई महाराना श्री स्वरूपसिंह उदैपुर

आनि मुदै उरकै दराजको ॥ सकल सुपास जहां दीन्ह्यो जनवास

तहां कीन्ह्यो सन्मान दे हुलास त्यों समाजको ॥ लखि लखि नारी

नयन नृपति किशोर सारी मैन वस भई छोंडी ऐन काज लाज

को ॥ कहैं ठाम ठाम कैधों काम सुखधाम धाम काम त्यागि जोहैं

जन ग्राम रघुराजको ॥ १ ॥ लगन विचारि कह्यो जादिन गण-

क गण तादिन पधारचो रघुराज द्वारमाह है ॥ देखिकै बरात

शोभा पुरजनवातलोभा रानहुको भा अथाह भारी उत्सा-

ह है ॥ व्याह भयो छोनीमें उछाह छायो महा तहाँ याचक उमाह

भरो यांचिभो अचाह है ॥ राह राह कहत न ऐसो नर नाह कहूं

सुन्यो सांच शाहनको करन पनाह है ॥

दोहा—रहस वहस युत होत भोपुनि उदार जेवनार ॥

सरदारन युत फेरि भो, दरबारहुँ दरबार ॥ १४० ॥

कावत्त-जेते ऐंडदार राजा राजत पछाह माहँ शाहन सों
अकस जे कीनीहै बजायकै ॥ कलम विनाही लिखे हिम्मत
न रही काहू महाराजा सुता जो विवाहै सुख छायकै ॥
महाराज विश्वनाथ सुत रघुराज सिंह अचरज कीनी करतू-
ति तेज छायकै ॥ सुनि सुनि ते वै नरराय पछिताय महा
हाथ मीजिरहे शरमाय शीशनाइकै ॥

दोहा-शिव यकीलिंग प्रसिद्ध तहँ, तिनके दर्शन हेत ॥

जातभयो रघुराज पुनि, मंत्री सैन्य समेत ॥ ४१ ॥

हय गय अरु मुद्रा सहस, सादर तिनहि चढ़ाय ॥

दर्शन लीन्ह्यो सरस उर, सरस हरस सरसाय ॥ ४२ ॥

महाराज विश्वनाथ सुत, श्रीरघुराज उदार ॥

फेरि नाथजी दरशहित, गये साथ सरदार ॥ ४३ ॥

साजि वाजि गज वसन वर, मोहर शत सुख साथ ॥

माथनाय अर्पण कियो, पद पाथज श्रीनाथ ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी-सन्मुख वैठि छवि निरखन लागे चख अंग अंग
केरी उर हरष बढ़ायकै ॥ ताही समै नाथजीको हाथ लै पुजारी
ऐना लग्यो दरशावै मोद गाथ हिये पाइकै ॥ श्रीवानाय हरि
तब बदन लखन लागे लखि रघुराजसिंह अचरज छायकै ॥ रण
दवनसिंह सों कह्यो या तू देखी कला भाष्यो तिन होहूँ लख्यो
नैन टक लायके ॥ १ ॥

दोहा-कृपानाथजी आपके, ऊपर करी महान ॥

सुनत पुजारीहूँ कह्यो, यहां प्रगट भगवान ॥ ४५ ॥

राम सागराह्निक अहै, विश्वनाथ कृत जौन ॥

वखतावर गायक लगे, गावन तिन ढिग तौन ॥ ४६ ॥

गावत सन्मुख निरखिकै, तहां पुजारी कोय ॥

आयकह्यो अस बैठिबो, रानहुँको नहिं होय ॥ ४७ ॥

कवित्त-दीन्ह्यो सो उठाय वखतावर विचारि यह हरिसर्व
त्रअहैं और ठौर जाइकै ॥ प्रेम पूर पागे लागे गावै राग सागर
को प्रभु को रिझाय लियो सुरनको छायेकै ॥ उवरे कपाट
सबै आपही सों तांही समै टेरिकै पुजारी कह्यो बाहेरहि आइ-
कै ॥ नाथको निर्देश अहैं लेहु वह गायकको इतही बोलाय बैठि
गावै हरषाइकै ॥

दोहा-कह पुजारि तुम्हरे उपर, रीझैहैं ब्रजराज ॥

सुनि वखतावर कह्यो सति, यह प्रभाव रघुराज ॥ ४८ ॥
सहितचमू चतुरंगिनि भाई । पुनि रघुराज शिविर निजआई ।
कछु वासर किय सुख युतवासा । राना मान्यो परम हुलासा ॥
सीखदेन अवसर जब आयो । तब राना निज निकट बोलायो
श्रीरघुराज समाज समेतू । गमनत भयो तहांमति सेतू ॥
लै आगू राना चलि धामै । बैठायो गद्दी अभिरामै ॥
कीन्ह्यो सकल भांति सत्कारा । दीन्ह्यो हय गय वसन अपारा ॥
भूषण बहु पुनि दिये अमोले । ज्योतिवान मणि मोतिननेले ॥
विश्वनाथ नरनाथ कुमारा । राना सों पुनि वचन उचारा ॥

दोहा-आप सुजान सयान हैं, मेरे पिता समान ॥

दीजै संमत तासु प्रभु, जो मैं करौ बखान ॥ ४९ ॥

स०-द्वैभगिनी मम व्याहन योग्य जहां तिनव्याहन योग्य उचारी
होय विवाह तहां तिनको ध्रुव जानत आप सबै बड़वारी ॥
राना स्वरूप सराहि कह्यो सुनिहैं हमहुँको खँभार या भारी ॥
सो सनम्बंध कियो हम ठीक हियो महुँ जयपुर नाह विचारी ॥

घनाक्षरी-नाम जाहि रामसिंह रूप अभिराम जाको तिलक

चढ़ायो जोधपुर नाह सुता व्याह ॥ पठवै वकील हमौ ढोल
नहिं हैहै काज आपहुको रीवां जात जयपुर परैगो राह ॥ महाराज
विश्वनाथसिंहको कुमार रघुराजसिंह बोल्यो सुनि भलोया
कियो सलाह ॥ सहित उछाह कृपा करिकै अथाह अब दीजै
सीख काह यहीहै उमाह मनमाह ॥ १ ॥

दोहा—सुनि राना सुख पायकै, सुंदर दिवस शोधाय ॥

सीख दियो रघुराज को, दै बहु धन समुदाय ॥ १५०

भूप स्वरूप अनूप सुनि, निज भगिनी हर्षाय ॥

विदा कियो धन अमित दै, शिविका रुचिर चढ़ाय ॥ १५१

संग रहे सरदार जे, ओ जे बंधु अपार ॥

यया उचित सब फौजको, कीन्ह्यो अति सत्कार ॥ १५२ ॥

महाराज विश्वनाथ किशोरा । अति प्रसन्न युत चमू अथोरा ॥

विजय मुहूरतमें सुख छाई । हरि गुरु गणपति पद शिरनाई ॥

सैन्य सहित द्रुत कियो पयाना । बाजे बहु गहगहे निसाना ॥

चलत चलत जैपुर नियरान्यो । महाराज जयपुरको जान्यो ॥

कोस भरेते लै अगुवाई । डेरा दिय देवाय पुर लाई ॥

सैन्य समेत शिविर पुनि आये । रामसिंह भूपति सुखछाये ॥

श्रीरघुराज उदार अपारा । विविध भांति कीन्ह्यो सत्कारा ॥

सो लहि जयपुरको नरनाहा । लह्यो ससैन्य मरम उत्साहा ॥

दोहा—फौज साजि पुनि मौज भरि, युत समाज रघुराज ॥

जयपुरके महाराजपै, गमन्यो प्रभा दराज ॥ १५३ ॥

निरखि निरखि जयपुर नर नारी । पावत भे उर आनंद भारी ॥

कछु दूरीते जयपुर राजा । आगू लै आवत रघुराजा ॥

महल जाय गद्दी बैठायो । आपहुँ बैठि परमसुख पायो ॥

विविध भांति सत्कारहि कीन्ह्यो । पाय सी येऊ अति सुख भीन्ह्यो ॥

सन्य सहित पुनि शिविर सिधाई। वात होन संबंध चलाई ॥
ठहरिगयो सो विनहिं प्रयासा । गुन्यो कृपा यह रमा निवासा ॥
रसम व्याह पूरब जो होई । सो दै करि सादर मुदमोई ॥
वृंदावन तीरथ करिवेको । बढी लालसा वसु दीवेको ॥

दोहा—सादरं सब सरदारसों, अरु देवानहु पाहिं ॥

कहहिं सफल होतो जनम, लखि वृंदावन काहिं ५४
सुदिन शोधाय ज्योतिषिन तेरे । श्रीरघुराज मोद लहि ढेरे ॥
श्रीहरि गुरु पदपंकज सौरी । सैन्य सहित वृंदावन ओरी ॥
कीन्ह्यो होत प्रभात पयाना । बजे फौजमें अमित निसाना ॥
बीच बीच बीथिन करि वासा । पहुँचत भये जबै ब्रज पासा ॥
सादर करिकै दंड प्रणामा । जातभये तुलसीवन ठामा ॥
वृंदावन मधुपुर दर्शाना । नंदगाँव जो विदित जहाना ॥
मुख्य चारि तीरथ ये करिकै । दर्शन करि साधुन मुद भरिकै ॥
पुनि चौरासी कोसहु केरी । किय प्रदक्षिणा लहि मुद ढेरी ॥

दोहा—हरिमंदिर जेते रहे, दर्शन किय पद जाय ॥

हय गय वसन अमोल अरु, मोहर अमित चढ़ाय ५५

राधा राधारमणकी, मूरति पुनि पधराय ॥

रागभोग हित गाँव यक, दीन्ह्यो तहां चढ़ाय ॥५६॥
पुनि विश्रांतघाटमें जाई । सुवरण तुला चढ्यो सुख छाई ॥
सो सुवरण ब्रजमंडल वासी । जेते रहे विप्र सुखरासी ॥
तिनको दै कीन्ह्यो अति तोषू । ते माने सब भांति समोषू ॥
तिमि यांचक जे रहे घनेरे । तिन्हें हेम बहु दिये निवेरे ॥
नारी रोंकि रोंकि मगमाहीं । कहि कहि लला लेहि गहि वार्हीं ॥
तिनको मनवांछित धन दीन्हे । शीशनाय बहु मानाह कीन्हे ॥
देश देशके याचक आये । भये प्रसन्न हेम बहु पाये ॥

ब्रजमंडलमें नर औ नारी । सब थल ऐसो परचो निहारी ॥

दोहा—लहि लहि अमित हिरण्यको, भाषहिं ते कहि धन्य ॥

यह नवीन परजन्य नृप, वरस्यो ब्रजहि हिरन्य ॥५७॥

कवित्त—दीन्हैहैं द्विजान पंडितान हेम महादान रघुराजसिंह
वृंदा कानन मैझारीहै । सुयश महान शीत भानुसों प्रकाशमान
सुकवि प्रधानमें वखान जासु भारीहै । मानिन अमानद अमानि-
नको मानदान ज्ञानिन प्रदान ज्ञान दीन त्राणकारीहै । दान
सनमानमें जहानमें न आन ऐसो भानुवंशमें निशान ज्ञान
ध्यान धारीहै ॥ १ ॥

दोहा—सुदिवश ब्रजते कूच करि, चलि मगमें दरकूच ॥

रीवांनगर पढ़ंचिगो, संयुत सैन्य समूच ॥ ५८ ॥

सोरठा—उदधि बंध यक चित्र, जामें यही चरित्र सब ॥

सो रचि चात विचित्र, लिखे देत चरचै सुकवि १ ॥



पारसीकेवैतका अर्थ—तनू सरा अंगरेजीके दोहा का अर्थ—दी क-
 कहे तन उसके तई पैरहन जो कप- हे प्रसिद्ध अमनि प्रीजंद कहे सर्व-
 रा सो भी डरियां कहे नंगा नहीं व्यापी जो है गाड़ कहे ईश्वर ताकी
 खताहै ताते जो कपरै उसके अंग- अन कहे पृथ्वी अर्थ कहे ताके ऊ-
 को नहीं देखताहै तो और कोई पर आई कहे हम प्रे कहे प्रार्थना
 उसके अंगको नहीं देखताहै यह करै हैं न्यारो कहे सूक्ष्म माई कहे
 कहा कहिवेको यह काव्यार्था हमार जो है हरट कहे चित्त ताके
 पत्ति अलंकार व्यंजित भयो कपरौ अन कहे ऊपर डीवाइन कहे दिव्य
 उसके अंगको कैसे नहीं देखताहै मर्थ कहे आनंद वृंकहे ल्यावने को
 बुजां दरतनू कहे जैसे जान जो है अर्थात् जामें दिव्य आनंद जो है
 जीव सो बीचनके है व तन दरकहे ब्रह्मानंद सो मेरे चित्तमें होय याके
 तनके बीच रहिहू कै जान जो है लिये मैं प्रार्थना करौहौं इहां सर्व-
 जीव सो नहीं देखाता है यह उप- श्वरहीके भरोसे सर्वदा रहौहौं यह
 मा लंकारते सुकीया नायका व्यं मेरे मनकी जानतई होयेंगे यह व्यं
 जित भई ॥ जित कियो ॥

कछु दिनमें आवत भयो, जयपुरको नरनाह ॥
 शाहन करन पनाहभे, भूपति जेहिं कुलमाह ॥५८॥
 भगिनि उभय रह जानकी, कृष्ण कुवैरि जिन नाम ॥
 व्याहि विदा कीन्ह्यो तिन्है, दै बहु धन अभिराम ॥५९॥
 पुनि बीते कछु काल श्री-विश्वनाथ नरपाल ॥
 ह्वै वश काल निवास किय, पास अवधपति लाल १६०
 श्रीरघुराज तनय तेहिं केरो । हरिइच्छा गुणि विन अवसेरो ॥
 मानि राज्य सब यदुपति केरी । कामदार सों कह्यो निवेरी ॥

राजाराम राज्यके एकू । तिनकी कृपा न भय मोहिं नेकू ॥
 स्वामि धर्मरत जन हितकारी । करिहैं कबहुँ न काम विगारी ॥
 सुदिन अवै न राज अभिषेकू । कह्यो ज्योतिषी सहित विवेकू ॥
 ताते भो मन भावत येहू । करो यज्ञ संवत करिदेहू ॥
 सुनि दिवान कह बहुत सराही । प्रभु भल कह्यो ऐसहीं चाही ॥
 तब रघुराज परम सुख पाई । आसु बनारस मनुज पठाई ॥

दोहा—विप्र वेद वित छिप्र बहु, रीवां नगर बोलाय ॥ ६१ ॥

सुदिन शोधाय सचाय गो, लछिमनबाग सिधाय ॥
 तहँ किय कठिन कायको नेमा । पगो परम यदुपति पद प्रेमा ॥
 मज्जन करि गायत्री जापा । प्रथम करै नितहरै जो पापा ॥
 पुनि षोडश प्रकार भरि चायन । पूजन करै रमा नारायन ॥
 पुनि नारायण अष्टाक्षर मनु । बीसहजार जपैं निहचल मनु ॥
 यही भांति विप्रनहुँ जपावै । रहै यकांत अनत नहिं जावै ॥
 पुरश्चरण सौ दिन करि यहि विधि।कृष्ण कृपा पात्रता लहीसिधि
 कह्यो स्वप्नमें आय मुरारी । राज्य करै ह्वै मम अधिकारी ॥
 लहत मनहिं मन परमहुलासा।कोहुसों कबहुँ न कियो प्रकाशा ॥

दोहा—जप अष्टाक्षर मंत्रको, बीस हजारहिं केर ॥

जौलों रहै शरीर जग, किय संकल्प करेर ॥ ६२ ॥

रमा द्वारकाधीशकी, त्यों बलकी करि मूर्ति ॥

हेम रजत रचवायकै, परम मनोहर मूर्ति ॥ ६३ ॥

वेद विहित करवायकै, आसु प्रतिष्ठा वेश ॥

बांधवेश विश्वनाथ सुत, पूजन करत हमेश ॥ ६४ ॥

करन लगै जप जेहिं समय, तब भरि मोद अनंत ॥

भजन सुनै भजनीनसों, निर्मित निज बहु संत ॥ ६५ ॥

सुदिन राज्य अभिषेक को, आयो जब मुदवान ॥

सब तदवीर महान भै, वेद विधान प्रमान ॥ ६६ ॥
 श्रीरघुराज जाय मपशाला । वसु मंत्रिनते सहित उताला ॥
 रघुपति यदुपति मूरति काहीं । थिति कै हेमसिंहासन माहीं ॥
 महाराज अभिषेक कराई । अभिषेकित भो आप सोहाई ॥
 श्रीकृष्णहिके कृपापात्र कर । अधिकारी भो विदित अवनिपर ॥
 कर परताप छयो परतापा । सज्जन सुखप्रद सुयश अमापा ॥
 पितु सम पालत प्रजन सप्रीती । नीति रीति करि मेदि अनीती ॥
 सुनि सुनि शाहहु जाहि सराह्यो । आय अजंट लाट भल चाह्यो
 राज्य करत वीत्यो कछु काला । दर्शन हित जगदीश कृपाला ॥

दोहा—करि लालसा विशाल लै, संग चमू चतुरंग ॥

रानिन युत जगपति पुरी, गमन्यो सहित उमंग ६७ ॥
 बीच बीच वीथिन करि वासा । श्रीरघुराज राज सहलासा ॥
 शतक संस्कृत यक जगदीशा । विरच्यो मैं निज आँखिन दीसा ॥
 भाषा शतक कवितमे दूजो । विरचन लग्यो सोउ मग पूजो ॥
 परचो अमर कंटक मग माहीं । गमनत भयो नाथ तहँ काहीं ॥
 मेकल गिरिते कठि तहँ प्रगटी । शिव प्रिय रेवा सरि अच निवटी ॥
 तहँ मज्जन करि दै बहु दाना । रेवा अष्टक रच्यो सुजाना ॥
 शिव अष्टक पुनि रच्यो तहांहीं । सिंहवलोकन छंदहि माहीं ॥
 रहे जे संत विप्र तहँ वासी । तिनको देत भयो धन राशी ॥

दोहा—सहित सैन्य चतुरंगिणी, तहँते करि सु पयान ॥

सेवरी नारायण निकट, जात भयो मतिवान ॥ ६८ ॥
 सेवरी नारायण करि दर्शन । किय सहस्र मुद्रा कहँ अर्पन ॥
 तहँते प्रभु पयान करि आसू । पहुँच्यो साखि गोपालहि पासू ॥
 मुद्रा सहस्र गयंद सुहायो । दर्शन लै कै तिन्हें चढ़ायो ॥
 दै सबको तिमि द्रव्य महाना । सादर चढ़ायो भगवाना ॥

पंडा गाड़िन लादि प्रसादा । लाय दिये लै युत अहलादा ॥
 महाराज सबको विरताई । खायो स्वाद अपूर्व सुनाई ॥
 श्रीरघुराज परमसुख भीनो । तहँते पुनि पयान द्रुत कीनो ॥
 जगन्नाथ मंदिरके ऊपर । नीलचक्रदरश्यों जब अवहर ॥

सोरठा—करि दंडवत प्रणाम, कीन्ह्यो पुरी प्रवेश प्रभु ॥

डेरा किय गुरुधाम, रानिन सहित हुलास भरि ॥

दोहा—तहँते गमनतभो तुरत, दर्शन हित जगदीश ॥

अरुण खम्भ ढिग द्वारमें, जात भयो अवनीश ॥६९॥

रकबा चारचो दिशि बन्धो, मंदिर मध्य उत्तंग ॥

लसत दुर्ग सो उदधि तट, तकत करत अब भंग १७०

प्रथम अकेले आपही, युत भाइन सरदार ॥

सादर भीतर द्वारके, जाय नरेश उदार ॥ ७१ ॥

घनाक्षरी—जगपति मंदिरके चारों ओर देवनके मंदिर सुखद
 तिन दरशकै सुखकारि ॥ सहित समाज परदक्षिणकै चारि फेरि
 मंदिर सिधारि शिरनाय खम्भ पन्नगारि ॥ जाय कछु निकट सुभ-
 द्रा बलभद्र युत सुछवि मुरारि वार वार नैन सों निहारि ॥ वारि
 मन प्रथम सँभारि तनु सुधि फेरि पलक नेवारि हेरि रहे धन
 वारि वारि ॥ १ ॥

स०—आजुभयो सफलो मम जन्म गुन्यो यह जन्ममें पुण्य बढ़ायो
 जानि लियो कियो पूरव जन्महुँ पुण्य महान विशेषि सुहायो ॥
 सत्य कहै रघुराज हौं आज अनेकन जन्मके पाप नशायो ॥
 जो बलभद्र सुभद्रा सुदर्शन औ जगनाथको दर्शन पायो ॥२॥
 लोचन सामुहे होत जबै तब देखनकी नहिं चाह सिराती ॥
 आनँद बाढ़ै जितो उरमें मिति तासु न मोसों कछू कहि जाती ॥
 को रघुराज वखानि सकै जगदीशकी शोभा त्रिलोक विजाती ॥

ज्यों ज्यों समीप है हेरै त्यां त्या क्षणहां क्षणम सरसै दर-
शाती ॥ ३ ॥

वनाक्षरी-कंचनको छत्र उभय चौर विजनादिनोल भूषण वसन
त्यों अमोल मोतीमालको ॥ मोहर अमित मुद्रा द्वै गयंद त्यों
तुरंग प्रभुहिं समर्पि पायो परम निहालको ॥ भूप रघुराज त्यों-
हीं दैकै सबहीको वसु नजर देवायो तहां देवकीके लालको ॥
पंडा औ पुरीके भये परमसुखारी पाय पाय धन भारी गाये
सुयश विशालको ॥ ४ ॥

सोरठा-कहत मनहिं मन नाथ, सो में करौं प्रकाशअब ॥

को समान जगनाथ, है कृपालु यहि जगतमें ॥ १ ॥

विविर जाय सुख पाय, पायो महाप्रसादपुनि ॥

तहँके तीर्थ निकाय, जाय जाय सादर कियो ॥ २ ॥

रानिहु सब सुखपाय, त्योंहीं नजर निकाइकै ॥

जगपति दरश सोहाय, करि मान्यो सफलै जनम ३

दोहा-बेखटका अटका अमित, चटकै दियो चढ़ाय ॥

मटका मटका लै गये, कोऊ सटका खाय ॥ ७२ ॥

महाराज रघुराज उदारा । अरुणखम्भढिग पुनि पगु धारा ॥

देश देशके जन बहु आई । जुरे पुरीके जन समुदाई ॥

पेखि अनूप भूपकी शोभा । सबहीको बरवस मन लोभा ॥

तहँ नृप नायक परम मुजाना । हेम तुला चढ़ि वेद विधाना ॥

सुवर्ण वृष्टि करी मन भाई । मानौ मघा मेघ झरिलाई ॥

रह्यो न पुरी कोऊ द्विज बाकी । जोन सुवर्ण लहै सुख छाकी ॥

रानिहुँ त्यों सिगरी तहँ आई । रजत तुला चढ़ि चढ़ि सुख छाई ॥

दोहा- भये अयाचक पुरी के, रहे जे याचक वृंद ॥

पाय पाय सुवर्ण रजत, गाय सुयश मुदकंद ॥ ७३ ॥

वनाक्षरी-शतक बनायो जाय आपहि सुनायो सुनि जगदीश
बलहु सुभद्रा मोद भीने हैं ॥ शिरते सुमनमाल तुरत खसाय
रीझि अभिराम सादर इनाम करिदीन्हें हैं ॥ कहै युगलेश
वेश दौरि बांधवेश तब संभृत कलेशहारी धन्य मानि लीनेहैं ॥
महाराज रघुराज भक्तिको प्रभावपुरी प्रगट देखानो जानो
भक्तराज वीनेहैं ॥

दोहा-लाखि प्रभाव तेहि ठाँव यह, कहैं लोग भरिचाय ॥

भक्ति भाव रघुरावसति, कस न द्रवैं यदुराय ॥ ७४ ॥
श्रीरघुराज मोद भो जेतो । एक मुख सों कहिसकत न तेतो ॥
माने सब जन अरु सरदारा । पूर्व पुण्य कछु कियो अपारा ॥
जाते वश अस नृप ढिग माहीं । हरि प्रभाव निरखे चख माहीं ॥
परदेशी अरु पुरी निवासी । अरु जे रहे भूप संग वासी ॥
चढ्यो रोज नृप अटकाजोई । ताते सबको भोजन होई ॥
एक गावैं जगदीश चढ़ायो । पंडा पाय परमसुख पायो ॥
पुरी सवाउमास किय वासा । सबको सब विधि देतहुलासा ॥
युत समाज हरिमंदिर जाई । लिय त्रिकाल दर्शन नृपराई ॥

दोहा-अर्द्धरात्रि नित जाय नृप, त्योंहीं दर्शन लेय ॥

पाय सुमहाप्रसादको, सबको सादर देय ॥ ७५ ॥

फागुनकी पूर्णिमाको, फूलडोल गोपाल ॥

झूलत निरखि निहाल है, कोन तज्यो जगजाल ॥ ७६ ॥

छंद-शुभदिवस तहँते गौन करिकै गया तीरथको गयो ॥

करि श्राद्ध वेद विधान सो बहु दान विप्रनको दयो ॥

द्विज पाय धन समुदाय वांछित करत भये वखानहैं ॥

जस गया कीन्ह्यो बांधवेश न नरेश कीन्ह्यो आनहै ॥

तहँ सुन्यो नौकरहूनके गे विगारि कारन पायेके ॥

अँगरेजके सब देश लूटे हनेगो रण धायके ॥
 ठिग वेगि बहु वागीन काहँ नरेश आसु मँगायकै ॥
 यकमें चढ़ायो द्वारकेसहि वेश प्रीति बढ़ायकै ॥
 पुनि नाथ सहित समाज है असवार बहुवागीनमें ॥
 चलिदियो परम निशंक परम प्रवीन परम प्रवीनमें ॥
 मिरजापुरै ठिग भूप आयो आय वागी वै तवै ॥
 बहु विनय कीनी आप कराहि सहाय तौ सुधरै सबै ॥
 तब नाथ ऐसो कह्यो तिनसों हाथ यह यदुनाथहै ॥
 सब भांति मोहिं भरोस जाको जो अनाथन नाथहै ॥
 सुनि गये ते सब महाराजहुँ आय रीवापुर वैसे ॥
 यकरच्यो नगर गोविंदगढ तहँ जायकै कबहुँ लसे ॥
 अँगरेजके वागी तिलंगा वागि सिंगरे देशको ॥
 वश कियो कोहु नरेश को रहे डरत कोहुँ नरेशको ॥
 मैहर विजय राघवहुके गे विगारि तिनके दावते ॥
 मग रोंकि गोरनको हने बहु जोर जुलुम जनावते ॥
 तब आय बहु अँगरेज रीवा नगर कियो निवासहै ॥
 महाराज श्रीरघुराज तिनको कियो परम सुपासहै ॥
 डर मानि रीवा नगर को नाहिं आय वागी कोउसके ॥
 मतिवंत अति श्रीवंत गुणि सब संत नृपको सुखछके
 अँगरेज लखि वर तेज भाष्यो बांधवेश नरेशसों ॥
 लैखर्च हमसों राखि लीजै और सैना वेशसों ॥
 मैहर विजय राघवहुके वागी उपद्रव करत हैं ॥
 चलि मारि तिन्हें निकारि दीजै दुरग लीजै हम कहैं ॥
 सुनि भूप तैसहि कियो सैनप दीनबंधु दिवानकै ॥
 लिय घेरि मैहर प्रथम तोप लगाय आसु पयानकै ॥

भगि गये तहँके यूह योगी वेगि करि तहँ थानहँ ॥
 पुनि विजयराघव घेरि लीन्हो संग सैन्य महानहँ
 तेउ भगे वांवां करत भै करी थान तहँऊ करि लियो
 महाराज श्रीरघुराज सुख भरि सौँपि अंगरेजहि दियो॥
 यह कृपा गुणि यदुराजकी रघुराज परम उदारहै ॥
 निज राजधानी आय कछु दिन वस्योसुखितअपारहै॥
 दोहा—रीवा ते जे कढ़ि गये, बहु सरदार सुखारि ॥
 वागी भे रण रारि कर, तिन मिसि नृपहुँ विचारि ७७
 कोपित है जरनैल बहु, लै संग सैन्य अपार ॥
 चढ़ि आयो रीवानगर, गोरा कइक हजार ॥ ७८ ॥
 हुकुम दियो महाराजको, करि दुष्टता विचार॥
 देखन हेतु कवाइदै, आवै आजु हमार ॥ ७९ ॥

सुनत कह्यो रघुराज उदारा । देखन चलिहँ कछु न खँभारा ॥
 हमरे सति सहाय यदुराई । का करिहँ अरि सैन्य महाई ॥
 तब रीवाँके लोग सुजाना । रह्यो जो और देवान पुराना ॥
 वरज्यो विनती करि बहु भांती।उचित न जाब प्रबल आराती॥
 तहँ यक दीनबंधु जेहि नामा । रह्यो दिवान वीर मतिधामा ॥
 कहत भयो सो प्रण करि भारी । चलिये आप न कछू विचारी॥
 क्षत्री है जो समर सकानो । कुलकलंक तेहि पावर जानो ॥
 यह रिपु करिहै कहा हमारो । करिहै रोष जायगो मारो ॥

दोहा—दीनबंधु दीवानके, वचन सुनत नरनाथ ॥

जात भयो रणसाज सजि, लिये सैन्य बहु साथ १८०॥
 भूप संग बहु सैन्य करेरी । सो जरनैल नयन निज हेरी ॥
 भय अति मानि देखाय कवाइत।गमन्यो हारि मानिकै निजचित॥
 महाराज रघुराज सचैनै । कृपा कृष्ण गुणि आयो ऐनै ॥

सुधि करि दीनबंधुकी वानी । ह्वै प्रसन्न बहु विधि सन्मानी ॥
दीन्ह्यो गाँव अनेक इनामा । गुणि मतिवान दिवान ललामा ॥
सुखयुत वीतिगये कछु काला । लाट हूनपति जौन विशाला ॥
लै बहु सैन्य कानपुर आयो । सब राजनको खत लिखवायो ॥
आवहिं इतै भेटके हेतू । सुनि सुनि सब नृप गये सचेतू ॥

दोहा—महाराज रघुराजको, लिखत भयो खत सोइ ॥

मुलाकात मम करनको, आवै इत मुद मोइ ॥ ८१ ॥
तहाँ चलन नृप कियो तयारी । वरजे तबहुँ इतै नर नारी ॥
दीनबंधु तबहुँ मतिवाना । कह्यो पैज करि वचन प्रमाना ॥
चलिये भूप संदेह न कीजै । विना चलेहीं भय गुणि लीजै ॥
सत्य विचारि वचन तिनकेरे । काहूके दिशि तनक न हेरे ॥
लै कछु सैन्य चैन भरि भूरी । चलयो कानपुर यद्यपि दूरी ॥
मगमें बहु जन किये निवारण । लाटबोलाये है कछु कारण ॥
गुणि हरि उर भरोस नृप भारी । काहू बोर न नेकु निहारी ॥
दीनबंधुके मग ज्वर भयऊ।सो न मानि कछु नृप सँग गयऊ ॥

दोहा—जाय सैन्य युत कानपुर, डेरा सुरसरि तीर ॥

करत भयो सुनि हूनपति, भयो मुदित मतिधीर ८२
दगी मुकामी फेरि सलामी । बैधी पंचदश जौन मुदामी ॥
पैदर अरु असवारन काहीं । दिय नृप अरुण पोशाक तहांहीं ॥
फूलसिरी अरुणै गज भासी । सूही साज वाजिगण गासी ॥
सरिस वसंत सैन्य सुठि सोही।लखि लखि भूपहु गे मन मोही ॥
लाट लखनऊ है जब आयो । मुलाकात हित नृपहि बोलायो ॥
मुख्य अमात्य जौन अभिरामा । दीनबंधु है जाको नामा ॥
श्रीरघुराज ताहि लै संगै । गये सैन्य युत भेट उमंगै ॥
यक साहेब लैकै अगवाई । सादर भूपहि गयो लेवाई ॥

दोहा-शिविर हूँनपतिके निकट, पहुँचे जब रघुराज ॥

पाय लाट साहेब खवारि, आगू लै महाराज ॥ ८३ ॥

करि सलाम दोउ परस्पर, पूँछतभे कुशलात ॥

कहे कुशल सब भाँति दोउ, बार बार हरषात ॥ ८४ ॥

वाम हाथ गहि दाहिने हाथै । गयो लेवाय लाट सुख साथै ॥

तरुत उपर द्वै कंचन कुरसी । धरवायो जु हूँनपति हुलसी ॥

तामैं अपने दाहिने ओरै । नृप बैठाय बैठ सुख वोरै ॥

नीचे तरुत सैकरन कुरसी । धरवावतभो साहेब विलसी ॥

तिनमें काशी चरकहरीके । रहे जे और भूप अवनीके ॥

औरहु जर्मीदार सरदारन । बोलि पठायो आये तोहिं छन ॥

तिनको तुरत तहां बोलवाई । दै ताजीम सबै सुखदाई ॥

क्रम क्रमते दीन्ह्यो बैठाई । बैठे ते सब शीश नवाई ॥

दोहा-मंत्री मुख सरदार जेहिं, दियो अजंट लिखाय ॥

नृप सँग चलि तेहिं क्रमहिते, कुरसी बैठे जाय ॥ ८५ ॥

निकट हूँनपतिके जबै, भई सभा यहि भाँति ॥

अति प्रसन्न रघुराज पै, भयो लाट मुदमाति ॥ ८६ ॥

तेहि पितु किस्ती जे लागि आई । तिनते अधिक तीनि लगवाई ॥

भूषण वसन विचित्र अमोले । तिनमें धरि धरि दियो अतोले ॥

पूर्व सलामी पंद्रह जोई । लाट हुकुम दिय दशवसु होई ॥

साजु नवीन भाँति बहु साजी । दीन्ह्यो यक गंयद वियवाजी ॥

परगन दिय सोहागपुर नामा । होत लाख मुद्रा जेहिं ठामा ॥

जानि भूपको मुख्य सचिव चित । कियो पराक्रम गुनि हमरे हित ॥

दीनबंधु पै ह्वै प्रसन्न अति । खिलत तोपयुत दियो हूँनपति ॥

पद दीवान बहादुर केरो । दियो लाट करि मान घनेरो ॥

दोहा—पुनि नृप सँग सरदार जे, गये तासु दरवार ॥

यथा उचित तिन सबनको, दीन्ह्यो खिलित अपार ८७

क्रमते पुनि सब नृपनको, दीन्ह्यो खिलत सराहि ॥

ते शिर धरि धरि लेत भे, ह्वै मन परम उछाहि ८८ ॥

पुनि रघुराज भूप मतिवाना । मुदित लाटसों वचन वखाना ॥

हम अस जहँ तहँ सुन्यो हवाला । लेन हेतु सबको करवाला ॥

आवत लाटसो हम पहिलेहीं । सौहीं देहि आप लैलेहीं ॥

सुनि सौहीं लै लाट उवाही । देखि भली विधि कइयो सराही ॥

यह सौहीं केहि देशहि केरी । कह नृप अहै फिरंग करेरी ॥

सुनत हूँनपति मन मुसक्खाई । सौहीं दै वाणी यह गाई ॥

तुव हथियारहि केवल तेरे । सदा रहैं हम विन अवसरे ॥

पुनि भूपति रघुराज उदारा । करि सलाम डेरै पगु धारा ॥

दोहा—सब भूपहुँ पुनि नाय शिर, गमने शिविर मझार ॥

इतै हूँनपति सैन्य युत, ह्वै करि सपदि तयार ॥ ८९ ॥

महाराज रघुराजके, आये शिविर सिधारि ॥

होत भयो जेहि विधि सदा, तेहिते अधिक विचारि १९०

करत भये सत्कार नृप, भो खुशलाट अपार ॥

वरण्यो इत संक्षेपते, भीति ग्रंथ विस्तार ॥ ९१ ॥

महाराज रघुराज पुनि, कूच तहाँ ते कीन ॥

सैन्य सहित रीवां नगर, आय सबै सुख दीन ॥ ९२ ॥

बाढ़ अठारहको दियो, लाट विशेष निर्देश ॥

दगै सलामि हमेश सो, आवत जात नरेश ॥ ९३ ॥

कछु दिनमें अरजंट पुनि, चलि सोहागपुर काहि ॥

भूपहि अमल कराय दिय, सुयश छाय जगमाहि ॥ ९४ ॥

सवैया—एक समय पगमें व्रणभो न अधीर भयो भई पीर

महाई ॥ जाप करै मनु बीस हजार करै तिमि राजको काज
सदाई ॥ दारि गये सब देश विदेशके वैद्य हकीम मिटी न मि-
टाई ॥ दूरि व्यथा भै जवै रघुराज दियो शतकै रचि शम्भु सुनाई १

दोहा—औषध किय प्रहलाद द्विज, तासु अयोध्या सून ॥

पायो मुद्रा शतसहस, गावँ उभय नहिँ ऊन ॥ ९५ ॥

ज्वर विकारते यक समय, नृप किय विपुल उपास ॥

तज्यो न तबहुँ जप करब, पूजन रमानिवास ॥ ९६ ॥

वालहिते कविता मन लायो । चित्रकूट अष्टकहि बनायो ॥

ग्रंथ रच्यो रघुनंद विलासा । हनुमत शतक कियो सहलासा ॥

लीन्ह्यो मंत्र केर उपदेशू । तब जे ग्रंथ रच्योहै वेशू ॥

तिनको अब मैं देत सुनाई । विनयमाल दिय प्रथम बनाई ॥

रुक्मिणि परि नय विरच्यो ग्रंथा । जामें विदित काव्यकी पंथा ॥

व्यासदेव जो रच्यो पुराना । श्रीभागवत प्रसिद्ध जहाना ॥

भाषा विरच्यो भूप उदारा । अहै बयालिस जौन हजार ॥

पुनि जगदीश शतक किय भाषा । जामें कवित विचित्र सुराषा

दोहा—रच्यो संस्कृत ग्रंथ विय, एक शतक जगदीश ॥

कियो सुधर्म विलास यक, श्रीरघुराज महीश ॥ ९७ ॥

तिलक बनायो तासु बुध, रंगाचारी वेश ॥

भजन कवित औरहु अमित, सादर रच्यो नरेश ९८ ॥

सोरठा—कानन जात शिकार, खेलत मारत शेरको ॥

और जे जीव अपार, तिनहिँ बचावत करि दया ॥ १ ॥

कवित्तघनाक्षरी—फेरत न आनन जो ऐसे उच्च वारनपै ह्वैक
रि सवार जाय नेर वेर वेरहै ॥ ढेर सरदार पै न सकत उठायको-
ऊ एसो लै रफल घालि करै बाघ जेरहै ॥ कहैं युगलेश गेर गेर
कहूँ ढेर ढेर ह्वाँई ठहराय जहां होंकत करेरहै ॥ हेर हेर मारै

लगे देर नहिं दौरिमेर भूप रघुराजसिंह शेरन पै शेरहै ॥ १ ॥

सोरठा—चलि पहाड़ महाराज, बागि बागि जेहिं वारिमें ॥

हने जिते मृगराज, ते गोकुल बुध पहुँ लिखे ॥ १ ॥

दोहा—महाराज रघुराजको, औरहु चारु चरित्र ॥

युगलदास वर्णन करत, जेहि यश छयो विचित्र ॥९९॥

शाह विलायतको दियो, सुका यक पठवाय ॥

लाट वजीर हमारसो, तकमा देहै आय ॥ २०० ॥

माधौगढ़गे यक समय, तहँते आगू लाय ॥

सुनि इबाल भे अति खुशी, सभा मध्य बैचवाय ॥ १ ॥

खत लिखि पठयो लाट पुनि, जहां आप मन होय ॥

चलि लीजै तकमा तहां, बड़ी बड़ाई जोय ॥ २ ॥

नृप लिखि पठयो काशिको, सोउ लिख्यो है वेश ॥

वांधवेश वर सैन्य युत, गो महेशपुर देश ॥ ३ ॥

मुलाकात दरवार जस, भयो कानपुर माहिं ॥

तस भो काशी लाट दिय, कहों सो तकमा काहिं ॥४॥

छंद—भूषण सितारैहिंदको दीन्ह्यो किताबी एकहै ॥

सुबहादुरी भूषण दियो यक जटित रत्न अनेकहै ॥

अति है प्रसन्न सुशाहजादी दियो रत्ननहारहै ॥

सो दियो नृप रघुराजको वरहूँनपति करि प्यारहै ॥५॥

किय कूच फेरि परेटते रघुराज भूप उदारहै ॥

जन यूह भये प्रसन्न अति लखि सैन्य तासु अपारहै ॥

चलि असी सुरसरि संगमें तट वास करि सुखछायकै ॥

मणिकर्णिका अरु गंगमें सउमंग जाय नहायकै ॥२॥

यक गाउँ औ गो सहस भूषण वसन नोल अमोलहै ॥

उपरोहितै दिय दान करि सन्मान प्रीति अतोलहै ॥

पुनि दरश किय विश्वेशको दिय गावँएक चढ़ाइहै ॥
 अरु सहस मुद्रा वसन भूषण अर्पणै किय चाहै ॥ ३ ॥
 अन्नपूरणा अरु बिंदुमाधव जाय निकट गोपालहै ॥
 पद पंचशत शत अर्पि मुद्रा लियो दरश विशालहै ॥
 पुनि कालभैरव ढुंढिपाणिहिँ और सिंगरे देवको ॥
 शत शत सु मुद्रा अर्पिकै दरशन लियो करि सेवको ॥
 पुनि पंचगंगा आदि जेते घाट रहे महानहै ॥
 करिमज्जनै तिनमें कियो जो दान करो बखानहै ॥
 गज तुरंग गोशत वसन भूषण अन्नकी बहु राशिहै ॥
 लहि विप्र काशि निवासि सब दिय आशिषैसहुलासिहै ।

दोहा—महाराज रघुराज पुनि,दारु तुला मँगवाय ॥

यक पलरामें देतभे,सुवरण मनन धराय ॥ ५ ॥

ढाल कृपाण पाणि निज लैकै । निज भूषण वसनहुँ ढिग धैकै ॥
 यक पलरामें सहित उछाहा । बैद्यो वांधवेश नरनाहा ॥
 सुवरण पलरा नीच लख्यो जबादिय नरेश सुनि देश आसु तब ॥
 अपनो गरू रफल्ल मँगार्इ । निज समीपही लियो धराई ॥
 तबहुँ सो पलरा नीच लखाना । तबहुँ नृपति अस वचन बखाना
 द्वै थैली ये मोहरन केरी । उलदि देहु न करहु अब देरी ॥
 कामदार ते सुनि सहलासा । उलदि दियो मोहर अनयासा ॥
 सुवरण पलरा महि लगि गयऊ । पलरा ऊँच भूपको भयऊ ॥
 तुला चढ़े अस लखि नृपकाहीं । किये प्रशंसा लोग तहांहीं ॥
 उतरि तुलाते नृप हरषार्इ । दशहजार मुद्रा मँगवाई ॥
 दीनबंधु दीवानहु भूपा । यक पलरा बैठाय अनूपा ॥
 यक पलराते रुपयन रूरे । दियो धराय मोद सों पूरे ॥

दोहा—भयो न ऐसो नृपति कोउ, कामदारको जोइ ॥
 तुला चढ़ावै रजतमें, चढ़ै हेममें सोइ ॥ ६ ॥
 बढ्यो शोर सुनि जननको, तहाँ भूप शिरमोर ॥
 कह्यो करै नहिं शोर कोउ, कहो वचन यह मोर ॥ ७ ॥
 पाँडे नंदकिशोर कह, सो सुनि भरि मुद थोक ॥
 बंद न हल्ला होत यह, छयो तीनिहूँलोक ॥ ८ ॥

राज राज पुनि श्रीरघुराजा । मानि मोद उरमाहिं दराजा ॥
 निज नामहिं श्लोक बनाई । सो द्वै सहस आसु छपवाई ॥
 प्रथम पंडितनको विरताई । भोर कमक्षा सपदि सिधाई ॥
 काशिराजको तहां मकाना । अति आयत रह विदित जहाना ॥
 तहँ मज्जन करि पूजन नीके । वोलि सहस द्वै विप्रन जीके ॥
 द्वै द्वै मोहर दिय सबकाहीं । विविध भांति सन्मानि तहांहीं ॥
 ते सब सुयश भूपको गावत । निज निज गृह गवने सुख छावत ॥
 फेरि आपने शिविर सिधारी । महाराज रघुराज सुखारी ॥
 रहे जे बाकी औरहु पंडित । सकल शास्त्रमें अतिहीं मंडित ॥
 सादर तिनको निकट बोलाई । करि सन्मान सभा बैठाई ॥
 दुइ दुइ मोहर और दुशाले । देतभयो युत प्रीति विशाले ॥
 त्यउ सब गावत सुयश भुआला । दै अशीश गृह गये उताला ॥

दोहा—कहत परस्पर बात यह, जात पंथ हरषात ॥
 सभा न किय अवदात असि, कोउ नृप ब्रात विख्यात ९
 रहे घाटिया विप्रजे, काशी कइक हजार ॥
 सुवरण तनु तिनके किये, सुवरण वितारि अपार २१०
 हाट हाट हाटक विपुल, भयो बनारस सस्त ॥
 रस्तन रस्तन वागते, पंडित मोहर मस्त ॥ ११ ॥
 रहे जे संत महंत तहँ, संन्यासी विख्यात ॥

सादर तिनको दरश लिय, देधन बहु सहुलास ॥१२॥
 देहरी वीस हजारहैं, काशी विप्रन केरि ॥
 नृप तिनके सत्कार हित, नीके मनहिं निवेरि ॥१३॥
 पांडे नंदकिशोर सिंह, ईश्वरजीत बघेल ॥
 तिमि शहिजादहुँ सिंहसों, कह्यो धर्मको वेल ॥१४॥
 हम अब रींविहि जातहैं, रुपया वीसहजार ॥
 लै देहरी सब द्विजन दै, अइयो निजहिं अगार ॥१५॥
 अस कहि भूपति भोरही, तहँते तुरत पधारि ॥
 निज पुरको आवतभयो, करि दरकूँच सुखारि ॥१६॥
 उत तीनों जन काशि वसि, विप्रन सहित विवेक
 दीन्ह्यो गनि देहरीनको, फरक पन्यो नहिं नेक ॥१७॥

कवित्त-राना राठि उरहाडा बडे कछवाह राजा आय आय
 कीन्ही सभा दैकै धन राशीहै ॥ दक्षिणके सूबा जे करोरिनके
 राज्यवारे आय तेऊ सभाकै सुकीरति प्रकाशीहै ॥ सुवर्ण वृष्टि
 पै न कीनी कोऊ आजु तक जैसे करे वारि वृष्टि भादौं मेघ खा-
 सीहै ॥ भूप विश्वनाथको अनूप तनय रघुराज जैसी
 जातरूप वृष्टि कीनी पुरी काशीहै ॥ १ ॥ घर घर
 वाट वाट गंगाजूके घाट घाट हाट हाट भाटहीं सों भाषैं
 जन राशीहै । पंडित अखंडित की कीनीसभा मंडित ना ऐसी
 कोऊ भूपति उदंडित विकाशीहै ॥ कहैं युगलेश रहि गयो ना क-
 लेशलेश याचक अशेशको विदेश देश वासीहै ॥ हम तुला भासी
 महाराज रघुराज यशी खासी कीर्ति अतुला प्रकाशी पुरी काशी
 है ॥२॥ भूपर घनेरे एक एकते बडेरें भूप भयेहैं अनूप पै न ऐसी
 कोऊ कीनीहै ॥ जैसी करी महाराज विश्वनाथ तनय यह महाराज
 रघुराज मोद उर भीनीहै ॥ काशीपुरी असी गंग संगम निकट

तट चट्टिकै हिरण्य तुला पुण्यकै अक्षीनीहै ॥ कहै युगलेश देश
देशके नरेशनकी जाइबो महेशपुरी राह रोंकि दीनीहै ॥३॥ केते
भूमिपाल भये भारी राज्यवारे भूमि केतकौ दिवान बड़े दानी
सत्यसंधुहै ॥ आय आय काशीपुरी लाय लाय द्रव्य भूरि देकै विप्र
वृंदनको पोष्यो पंगु अंधुहै ॥ पै न ऐसो भयो जौन हेम रौप्य तुला
चट्टि दान अतुलकै छावै सुयश सुगंधुहै ॥ राजा रघुराज राजै की
तो या जमाने मध्य की देवान ताको श्रीदिवान दीनबंधुहै ॥४॥

कुंडलिया—सुवरण वृष्टि करी उत्तै, काशी नृप रघुराज ॥
तेहि प्रभाव तिहि देशवन वरसे वारिदराज ॥
वरसे वारिदराज सकलमें भयो सुभिक्षै ॥
रह्यो नलेस कलेशवेशमिटिगो दुर्भिक्षै ।
भिक्षै माँगत रहे रंक जे घर घर कुवरन ॥
तेऊ पाय अनाज भूरि ह्वैगे तनु सुवरन ॥ १ ॥

दोहा—महाराज रघुराजको, दृढ़ विश्वास यदुराज ॥
तेहि प्रभाव सुखसाज सज, सुकर दराजहु काज ॥ १८ ॥
कवित्त—जोधपुर महाराज राज्यहै दराज जाहि राज काज ऐशही
में बीतै दिनरैन है ॥ साहिबी सुरेशसी धनेश ऐसी मौज समै तेजमें
दिनेश वेश विलसति शैनहै ॥ मैनकीसी मूरति मनोहर तख
तसिंह बखत बुलंद निरखत करै चैनहै ॥ जाके उर ऐन युगले-
शकहुं लेस भैन देखे वैन नैनवैन कहत बनैनहै ॥ १ ॥

दोहा—राना नृप कछवाह अरु, हाडा भूप विहाय ॥
जेती लसत पछाहमें, भूपन कीसमुदाय ॥ १९ ॥
तिनके भेजि कटारजो, करत आपनो व्याह ॥
ऐसो प्रथित पछाहमें, जोधपुरी नरनाह ॥ २२० ॥
पुरुषनते संबंध गुणि, तरुतसिंह नरनाह ॥

रीवा करन विवाह को, कीन्हयो परम उछाहा ॥ २२३ ॥
 रानिन सुतन समेत भुवाला । निजपुरते किय गमन उताला ॥
 जेठो कुँवर तासु रह जोई । चतुरंगिनी फौज लै सोई ॥
 आवत भयो आगरे जवहीं । मिल्यो नृपति जयपुरको तवहीं ॥
 ताकी तासु मित्रता भारी । तासों ऐसी गिरा उचारी ॥
 जेहि कन्याको तिलक चढ़ो तुव । सोहै गई कालके वश ध्रुव ॥
 जो रघुराजसुता अब अहई । सो तुव भयऊ नृप घर रहई ॥
 तासों तुव नहि उचित विवाहा । रीवां जान न करहु उछाहा ॥
 हमरे सँग जयपुर पगु धारो । सुनि सो कह यह भलो उचारो ॥

दोहा—है सवार वग्यो तुरत, जयपुरको नरनाह ॥

ताको संग चढ़ाय कै, लैगो जयपुरकाह ॥ २२ ॥

महाराज रघुराजकी, जेठि सुता वश काल ॥

होत भई तबइतहिते, सुमति दिवान उताल ॥ २३ ॥

लिख्यो जोधपुरको यह पाती । जहँ अजवेशरहै विख्याती ॥
 जासु तिलक जेठेको चढ़ेऊ । सो नृपकी दुहिता जिय कढ़ेऊ ॥
 ताते यह नृपसुता जो अहई । तासु व्याह जेठेको चहई ॥
 तामें पक्काइत करिलीन्हयो । तब तुम इतै पयानहि कीन्हयो ॥
 यह पाती लहि कवि अजवेशा । सो पक्काइन करि लियवेशा ॥
 नृप दिवान कहँ पत्र पठायो । हम यह पक्का इत करि भायो ॥
 सो आगरे सुरति विसरायो । जेठ कुँवरको नहि लै आयो ॥
 तरुतसिंह नृप रेल चढ़ाई । सबको तीरथपति नहवाई ॥

दोहा—सबको करि दीन्हयो विदा, ते है रेल सवार ॥

रानी सुत सब सैन्यगे, निजपुरको विनवार ॥ २४ ॥

छरे संग सरदारलै, युग रानी सुत दोय ॥

तरुतसिंह आवत भये, रीवाको मुदमोय ॥ २४ ॥

नृप रघुराज मोद उर छाई । शिविर करायो ले अगुवाई ॥
 सुदिवशमें त्रय भयो विवाहा । छायो वर वर परमउछाहा ॥
 जो पितृव्यकी सुता सयानी । तरुतसिंहव्याह्यो सुखमानी ॥
 तरुतसिंह ल्याये सुत दोई । तिनमें जेठ कुँवर रह जोई ॥
 ताको सुता आपनी व्याही । महाराज रघुराज उछाही ॥
 तेहिते लहुरे कुँवरहिं काही । सुता विमानृ भगिनि कहँ व्याही ॥
 दायज देन जु रह्यो करारा । पंचलक्ष दिय द्रव्य उदारा ॥
 हय गय भूषण वसन अमोले । दियो तिन्हें रघुराज अतोले ॥

दोहा—मेवा सकल मँगायकै, अरु मिठाइ बहु भांति ॥

कैयो दिन सादर दियो, ऊँच नीच सबजाति ॥२६॥

चारि रोजको नेम जग, रखि मास लों वरात ॥

पूरी साज सबै जनन, पूरी सुख सरसात ॥ २७ ॥

रत्न जटित सुवरण कटक, अरु बहु मोती माल ॥

निज सरदारनको दियो, छायो सुयश विशाल ॥२८॥

कवित्त—एक समै बांधवेश महाराज रघुराज छरे सरदारन
 औ संगलै देवानहै ॥ रेलमें सवार कलकत्ताको पयान कीनो ह-
 रिहर क्षेत्र आदि तीरथ महान है ॥ परेमग तहाँकै नहान दै
 द्विजान दान तीजे रोज जब कलकत्ता नगिचानहै ॥ हूनपति
 आज्ञा पाय हून मुख्य आगू आय लै गयो लेवाय डेरा देतभो
 मकान है ॥ १ ॥

दोहा—डेरा आयो लाट पुनि, देखि भूपको रूप ॥

रूप न अस कोहु भूपको, भूपर गन्यो अनूप ॥२९॥

मुद्रा सहस रसोंई काहीं । शिविर जाय पठयो सुखमाहीं ॥

दूजे दिन पुनि नृपति उदारा । सादर लाट शिविर पगुधारा ॥

सो आगूलै उच्च जो कुरसी । बैठायो तामें अति हुलसी ॥

विविधभांति कीन्ह्यो सत्कारा । सो कहँलों कवि करै उचारा ॥
 बड़कीमतिकी उभय दुनाली । देत भयो शत्रुनको शाली ॥
 फेरिलाट असि गिरा उचारी । ईजा लही आप मग भारी ॥
 यहि पुर होत कलैते कामा । याते कलकत्ताहै नामा ॥
 द्वै चारिक चलि ठौर विशेषी । लेहि आपहु आखिन देखी ॥
 दोहा—पांचलाख मुद्रा नितहि, बनत कलैते ख्यात ॥

तूल सूत विनिबो वसन, होत कलैते व्रात ॥ २३० ॥
 शहर फनूस बरै बुतै, निशि कलते यक साथ ॥
 इत्यादिक बहु औरऊ, निरखि नंद विश्वनाथ ॥ ३१ ॥
 कह्यो लाट साहेब सों जाई । यहि पुर कला अपूर्व लखाई ॥
 तकन तोपखानै पुनि भूपा । गये लखे युग तोप अनूपा ॥
 रहैं अठारै पंनी केरी । तिनहि सराहतभो नृप ठेरी ॥
 सो यक मनुज लाटसों कहेऊ । लाट खुशी है हुकुमहि दयऊ ॥
 महाराज ऐसी युगतोपा । तुमहि देतहैं हम भरि चोपा ॥
 अहैं प्राग सो लेव मँगाई । दिये देत हम अहैं रजाई ॥
 द्वैशत फेरि तिलंगन काहीं । पथरकला दीन्ह्यो सुखमाहीं ॥
 पुनि कह तुव दिवान सरदारा । वीर बड़े अरु सुघर अपारा ॥

दोहा—बहुत रोज आये भये, अहैं रुजी यह देश ॥

याते अब निज पुरीको, कीजै गमन नरेश ॥ ३२ ॥
 लाट वचन तब भूप सुनि, है द्रुत रेल सवार ॥
 मग नृप बहु सन्मान लहि, आयो पुरी मँझारा ॥ ३३ ॥
 दंडहु भरको हुकुम नहि, तहैं असि लै सब ठाम ॥
 इनके जन वागैं वचैं, और कसूरी नाम ॥ ३४ ॥
 अरज कियो जो लाट सों, सो सब पूरण कीन ॥
 कह्यो आपनी राज्यमें, करो जो चहो प्रवीन ॥ ३५ ॥

चारि अश्व वग्घीनमें, चढत लाट नहिं कोय ॥
 चढै जो कोऊ धोखेहुं, देइ दंड ध्रुव सोइ ॥ ३६ ॥
 सो पठयो महाराज पै, गुणि सो निजहिं समान ॥
 चढि भूपति रघुराज तव, गुन्यो कृपा भगवान ॥ ३७ ॥
 मान्यो यह रघुराज नृप, सब यदुराज प्रभाव ॥
 और येक आगे चरित, वरणों भरि चित चाव ३८ ॥
 विजयनगर है नामजेहि, ईजानगर विख्यात ॥
 तहँको गजपतिसिंहहै, भूपति मति अवदात ॥ ३९ ॥
 सादर सहित कुटुंब सो, बस्यो बनारस आय ॥
 ताके भै यक कन्यका, रति सम सुंदर काय ॥ ४० ॥
 तेहि व्याहन हित सो उत्साहन । भेज्यो जन पछाह नरनाहन ॥
 ते सब दूरिदेश बहु मानी । अपनो जाव अगम मन जानी ॥
 ताते ते न कबूलहि कीने । मुद्रा लाखनहूँके दीने ॥
 तब सो ईजानगर भुवाला । मनमें कीन्ह्यो शोच विशाला ॥
 पुनिकीन्ह्यो अस मनहिं विचारा । रीवां को है बड़ो भुवाला ॥
 तेहिते जो ममसुता विवाहू । होय तो होवै महाउछाहू ॥
 एक समय रघुराज उदारा । भेंट करन जयपुरहिं भुवारो ॥
 मिरजापुरको कियो पयाना । तहँ नृप ईजानगर सुजाना ॥
 दोहा—मुलाकात करि नजरदै, बहु विधि कीन्ह्यो सेव ॥
 पुनि जब तकमा लेनको, गयो काशि नरदेव ॥ ४१ ॥
 तबहूँ बहुविधि सेव करि, सुता व्याहके हेत ॥
 विनयकियो बहुभाँति सों, सो नृप बड़ो सचेत ४२ ॥
 नाथ कह्यो वकील करि दीजै । ज्वाब स्वाल तेहि मुख नृप कीजै
 सुनि प्रसन्न गजपति नृप भयऊ । सादरनिजवकील करि दयऊ ॥
 भयो जवाब स्वाल युगवरषा । परिनयको टीको कछुनरषा ॥

पूँछ्यो प्रभु तेहि नृपकी आदी । भाषतभे वकील अहलादी ॥
 राना विदित उदयपुर केरे । तिन भाई करि लेहि निवेरे ॥
 सुनत उदयपुर खत लिखवायो । रानाजी लिखि तुरत पठायो
 ईजानगर भूपजो रहई । सो हमरो भाई सति अहई ॥
 सुनि खत बांछवेश महाराजा । कह वकील सों वयन दराजा ॥

दोहा—लै आवहु द्रुत तिलक इत, लै आये ते जाय ॥

टिके रहे बहु मासलों, तिलक न चढ़त जनाय ४३॥

रामराजसिंहको तिलक, चढ़नको कहै वकील ॥

भूप कहैं नहिं बनत उन, कहैं ज्योतिषी ठील ॥४४॥

कतहुँ न तुव संबंध तेहिं, तुव संबंधी माहिं ॥

याते इत सब जन कहैं, व्याह योग उत नाहिं ४५॥

अति मतिवंत भूप रघुराजू । गुन्यो वृथा सब करत अकाजू ॥

पांचलाख मुद्रा यह देई । तिलक माहिं अति आनंद भेई ॥

उभय लाख द्वारे महुँ देहैं । उभय लाख सँग सुता पठैहैं ॥

हय गय भूषण वसन अमोला । और उपरते देइ अतोला ॥

दोषहु यामें कछु न जनाई । रानाको प्रसिद्धहै भाई ॥

यह करि ठीक मनहिं मतिवाना । कलकत्ता जब कियो पयाना ॥

तहुँ किय लाट अग्रते ठीको । रामराजसिंह परिनय नीको ॥

दाइज लेन रही जो चाहा । ताहूको करि दियो निवाहा ॥

दोहा—रीवांमें द्रुत आय प्रभु, कह पितृव्य सुत पाहिं ॥

साहेब ढिग सिद्धांत भो, तिहरो व्याह तहाँहिं ॥४६॥

कहत रहे जे होवे नाहीं । तेउ चुपभये न कछु बतराहीं ॥

नृप वकील ते कहि घर शाहू । पांच लाख धरवाय उछाहू ॥

रामराजसिंहको लै संगै । साजि वरात चलयो सउमंगै ॥

काशीको जब गये निराई । डेरा दिय सो लै अगुवाई ॥

तहँइसो पुनि तिलक चढ़ायो । हय गय भूषण वसन मँगायो ॥
मुद्रा सहस पचाश मँगाई । गजपति सिंह दियो सुख छाई ॥
होत भयो पुनि सविधि विवाहा । पूरि रह्यो काशी उत्साहा ॥
तहँ गजपति नरेशकी रानी । रूप भूप रघुराज लोभानी ॥

दोहा—कहत भई निजनाहसों, सो उरभरी उछाह ॥

महाराज रघुराजको, कस नहिं कियो विवाह ॥४७॥

सो कह जब तुमसों कह्यो, तब तुम मान्यो नहिं ॥

अब न सोच संबंध जेहिं, पूरब होत तहाँहिं ॥ ४८ ॥

चारि रोज तहँ रही वराता । कीन्ह्यो सो सत्कार अवाता ॥
पुनि सादर जब कियो विदाई । मुद्रा दिय द्वै लाख मँगाई ॥
हय गय भूषण वसन जमाती । बड़े मोलके दिय बहु भांती ॥
पुनि सरदारन और वकीलन । मुद्रा दिय पठाय धरि पीलन ॥
नृप रघुराज फेरि सुख छाई । रूपया मोहर अमित मँगाई ॥
सादर रामराजसिंह काहीं । तुला चढ़ाय गंग तट माहीं ॥
सब विप्रनको दियो देवाई । जय जय ध्वनि काशी महँ छाई ॥
राम निरंजन संत महाना । वसे बनारस विदित जहाना ॥

दोहा—सकल शास्त्रमें निपुण अरु, कामादिकते हीन ॥

राम निरंजन सो न अब, कतहूँ संत प्रवीन ॥ ४९ ॥

महाराज रघुराज उदारा । तिनके दरश हेतु पगु धारा ॥
भूपहि आवत जानि दुवारा । चलि सेवक अस वचन उचारा ॥
नाथ दरशहित बहु नृप आवैं । दरशि दूरिते सपदि सिधायैं ॥
सो आपहु दर्शन करि आवैं । बैठन कहैं बैठि तो जावैं ॥
सुनि बोल्यो रघुराज नरेशा । बैठव तबहिं जो होइ निदेशा ॥
अस कहि प्रभु ठिग चलि सुखधामा । वार वार किय दंड प्रणामा ॥
दै अशीश बहु बैठन कहेऊ । बैठि यामलों नृप सुख लहेऊ ॥

कह प्रभु नृप विशुनाथ समाना । रामभक्त नहिं भयो जहाना ॥

दोहा—सब विद्यनिमें निपुण तिमि, दानी विदित महान ॥

तासु तनयतैसहि तुमहुँ, सम अबहुँ ना आन २५० ॥

शम्भुशतक जगदीशहु शतकै । विरच्यो तुमसुनि जेहि बुधसुछकै ।

जस तुम भक्त अहौ नारायण । तस ईश्वरीप्रसाद नरायण ॥

जस पूरण सुख तुमते भयऊ । तैसहि उनहुँ ते सुख ठयऊ ॥

नृप पछाहियनमें कछु रूरो । बूँदी नृपति ज्ञानते पूरो ॥

तेहिंके आये भो सुख आधो । तुम सम कोउ न कृष्ण अवराधो ॥

अति प्रसन्न करि दण्ड प्रणामा । गमन्यो पुनि भूपति सुखधामा ॥

सकल देव संतन गृह जाई । यथा योग बहु द्रव्य चढ़ाई ॥

रामनगर गो सुरसरि पारा । गो लेवाय सो नृपति उदारा ॥

दोहा—रामराजसिंहकोसतिय, घर दिय पठै ससैन ॥

आपरेल चढ़ि आयकै, मिरजापुरहिसचैन ॥ ५१ ॥

पुनि वग्धी असवार है, सैन्य सहित सुख पाय ॥

रीवांको आवत भयो, लै संपति समुदाय ॥ ५२ ॥

बंधु कसौटाको विदित, वंशपती महाराव ॥

महाराज सों यक समय, विनय वचन मुखगाव ५३ ॥

नाहक हमें अशुद्ध जग, कहत अहैं सब लोग ॥

विमुख आपते जो भये, यहां बड़ो उर सोग ॥ ५४ ॥

सवैया—आपहिके हमहैं करुणानिधि आप जो लीजिये मो

गहि पानी ॥ तौ अहिती हमरे जे अहैं जे असत्य बतात तिन्हें

परै जानी ॥ दीजिये भात कृपाकरिकै सुधरै मम लीजिये सत्य

या मानी ॥ श्रीरघुराज कह्यो हंसिकै यदुराज सुधारिहैं

है सति बानी ॥ १ ॥

दोहा-भात देत सुनि नृपहिको, वरजे बहु जन वृंद ॥
 महाराज कह मानिहैं, कहिहैं जस गोविंद ॥ ५५ ॥
 अस कहि यक कागज लिख्यो, यह अशुद्धहै नाहिं ॥
 अशुद्ध अहै यह यक लिख्यो, धरि दीन्ह्यो हरि पाहिं ५६
 नयन मूँदि जगदीश ढिग, पंडा तुरतहि जाय ॥
 लै आयो कागज सोई, यह अशुद्ध नाहिं आय ॥ ५७ ॥
 नृप जगदीश निदेश लहि, शुद्ध मानि विख्यात ॥
 वंशपतीको करिलियो, भातहिमें अवदात ॥ ५८ ॥
 पंडा तुलसीरामको, अग्निहोत्र करवाय ॥
 कियो अग्निहोत्री विदित, रह्यो सुयश जग छाय ॥ ५९ ॥
 दशहजार मुद्रा अउर, दो हजारको ग्राम ॥
 दै गोविंदगढ़ वास दिय दै, शुभ धाम अराम ॥ ६० ॥
 छप्पय-श्रीरघुराज सुवाजपेयि किय रह यश छाई ॥
 याचक सोइ सोइ वस्तु लही जोई मुख गाई ॥
 विप्र जे याज्ञिक रहे लहे ते द्रव्य हजारन ॥
 भूषण वसन अमोल हेत असवारी वारन ॥
 कवि वेश कहै युगलेश चलि, देशन देश नरेश मधि ॥
 ह्वै विन कलेश मुख गाय यश, भये धनेश सुरेश सधि ॥ १ ॥
 कुंडालिया-सबनरनाहनते अधिक, बादशाह कियमान ॥
 महाराज रघुराजसों, कौन सुजान जहान ॥
 कौन सुजान जहान सुकवि करि सकै वखानै ॥
 जो वखायो वसु वसन जनन कहैं वे परमानै ॥
 मानै निज लखि तजे भूप कलकत्ते महँ तब ॥
 युगलदास यह कृपा जानि लीजै सतिके सब ॥ १ ॥
 कवित्तघनाक्षरी-वाजिन सवार राज राजिन कराय तहां

निज असवारी साथ शाह सोधवायो है ॥ लाट कोठी कुरसीमें
बांधवेशको बैठाय निज असवारीको जलूस दरशायो है ॥ देखि
सब भूप लेखि निजते अधिक मान शरमाय शीशते विशेषिहीं
नवायोहै ॥ सांच यदुराज कृपा जानै रघुराज पर जौन सब
राजनते अधिक बनायोहै ॥ १ ॥

दोहा—लाख लाय मुद्रा नजर, देनचहे नरनाह ॥

तिनको लियो न मानि तृण, शाह सहित उत्साह ६१॥

मुद्रा सहस पचासकी, दियो अँगूठी नाथ ॥

लै सराहि रघुराजको, पहिरिलियो निज हाथ ॥६२॥

कवित्त—महादेवजीके सम देव नर दानवमें भयो ना त्रिलोकी
माहिं राम भक्ति धारीहै ॥ सीय वेष कीन्ही सती ताहि त्यागि
दीन्ह्यो जौन दक्षकी सुता जो रही प्राणनते प्यारीहै ॥ अब क-
लिकालतो कराल या कलुषमयो तामें वैसोहोय नहिं परत नि-
हारीहै ॥ महाराज विश्वनाथ तनै रघुराज वैसो भयो युगलेश
कछु कहत उचारीहै ॥ १ ॥ छीतूदास भगत पधारे एक समै
रीवां कातिकते फागुनलों रहे सुख छायकै ॥ फगुवाके रोज
रैन निकसे बजार मग राम सिय लषणको गजमें चढ़ायकै ॥
दीनबंधु धाम ढिग एक बनियाको घर रह्यो तासु सुत लै खेलौ-
नादी चलायकै ॥ चौंकि उठयो गज झूल जरी डोलि उठे द्रुत
कोऊ जन जाय कह्यो नृपको सुनायकै ॥ २ ॥

दोहा—भोर होत तेहिं वणिकको, भूपति लियो लुटाय ॥

द्वै हजारको वसनतेहिं, लीन्ह्यो तुरत मँगाय ॥६३॥

आधे आधे सो दियो, मोहन दशरथ काहिं ॥

दीनबंधु सो सुनि कियो, वणिक सहाय तहाँहिं ॥६४॥

वणिक पुत्र भगिजातभो, छीतूदासहि पास ॥

आय भक्त महाराज ठिग, शासन दिय सहुलास ॥६५॥

क्षमि आगस यहि वणिकको, दीजै लूटि देवाय ॥

कुटी सिधारव काल्हि हम, सुनि बोल्यो नरराय ६६

वह भगवत भागवतको, कियो महा अपराध ॥

याको देन न कहिय प्रभु, और न होई बाध ॥६७॥

यहि अपराधी वणिकको, कीन्ह्यो जौन सहाय ॥

उचित दंड सोउ पायहै, यह प्रभु देहि सुनाय ॥६८॥

पुनि निज कुटी भक्त पगु धारे । महाराज उर अति मुद धारे ॥

परममित्र मंत्री यशवारा । रह्यो जौन प्राणनको प्यारा ॥

मुख्य देवान कह्यो जेहि काहीं । लाट खिलत दीन्ह्यो मुदमाहीं ॥

ताहूको गुणि वणिक सहाई । कामकाजते दियो छोड़ाई ॥

रहे जे कामकाजि तेहि संगी । तिनहुँ छोड़ाय दियो सउमंगी ॥

दक्षिण देउरा नगर ललामा । तहँ जेहि थान अहै सरनामा ॥

लालशिवबकशसिंह तेहि नामा । धीर वीर अतिहीं मतिधामा ॥

तासु अनुज भगवतसिंह तैसे । वचन जासु अंगद पग कैसे ॥

तेहि शिवबकश सिंह सुत रूरो । लालरणदवनसिंह गुण पूरो ॥

कैयक अनुज तासुके जानो । तिनमें दिग्गजसिंह सुजानो ॥

लालरणदवनसिंह पर प्रीती । करि रघुराज मीत गुणि नीती ॥

सकल बघेलखंड जो राजी । किय मुखतार परम ह्वै राजी ॥

दोहा—माधवगढ़ ठिग पार सरि, कछिया टोला गावँ ॥

नावँ जासु दिलराजसिंह, मालिकहै तेहि ठावँ ॥६९॥

अमरसिंह कल्याणसिंह तासु सुवन गुणग्राम ॥

महाराज परसन्न है, तिनहुँको दिय काम ॥ २७० ॥

वांकेधौवा सिंहको, कोष काम करि दीन ॥

देशी परदेशी बहुत, काम दियो सुखभीन ॥ ७१ ॥

तिन सबको मुखतारके, भूपति किय आधीन ॥
 ते सब अवलों करत हैं, काम लोभते हीन ॥ ७२ ॥
 छंद—यक काल अकाल कराल पन्यो ॥
 विन अन्न दुखी बहु जीव मन्यो ॥
 महिमें कैंगला सहसान जुरे ॥
 सरि औसर राहन रोज फिरे ॥ १ ॥
 बहु पर्गन बांधवदेश ठये ॥
 विन अन्न दुखी सब जीव भये ॥
 रघुराज गरीबनेवाज महा ॥
 दिय अन्न तिन्हें मुदमें उमहा ॥ २ ॥
 अंगरेजहु जौन निदेश कियो ॥
 रुपयां तेहिं पंचसहस्र दियो ॥
 जोहिं ओरेहु देशनके कैंगला ॥
 विन अन्न न शोक लहैं अचला ॥ ३ ॥
 दोहा—झूर अन्न केतेन दियो, केतेन दै पक्कान ॥
 केतेनको पैसा दियो, केतेन मुद्रादान ॥ ७३ ॥
 सोरठा—जौलों रघुओ अकाल, लाखन रुपया खर्च करि ॥
 किय दीनन प्रतिपाल, को कृपालु रघुराज सम ॥ १ ॥
 कौन गरीबनेवाज, महाराज रघुराज सम ॥
 छायो सुयश दराज, समुद्रांतलों अवनि तल ॥ २ ॥
 सवैया—तीक्ष्ण जासु प्रताप दिनेशको आतप तेज महीप सरै ॥
 तापित है रिपु तासु हमेश कलेशित वासु अरण्यकरै ॥
 भाषत है युगलेश सही यह मानै उरैमें विशेश नरै ॥
 श्रीरघुराज नरेशके देशन शीतको पेस करै पसरै ॥
 महाराज रघुराज सपूती । है अपूर्व जिनकी करतूती ॥ ॥

पितुते अधिकै राज्यवढायो । पितुते अधिकै द्रव्य कमायो ॥
 पितुते अधिक कोष किय भारी । भूपति श्रीरघुराज सुखारी ॥
 एक अनूपम शहर बसायो । गोविंदगढ़ तेहि नाम धरायो ॥
 रीवांमें जस रहे मकाना । तिनते अधिक तहां निरमाना ॥
 ताल विशाल एक बनवायो । विश्वनाथ नृप नाम सुहायो ॥
 जाके तीर तीर सरमाहीं । विरचायो बहु मंदिर काहीं ॥
 तिनमें रघुपति यदुपति मूरति । पधरायो परिकर युत अति रति
 दोहा—प्रति उत्सव जो करतहैं, साधुन सेवा वेश ॥

सीयव्याह उत्सव तहां, करत नरेश हमेश ॥ ७४ ॥

छीतूदास सुसंत यकं, सादर तिनहिं बोलाय ॥

करत व्याह उत्सव सुखद, अगहन मास सोहाय ॥ ७५ ॥

संत महंतहुँ विप्र अपारा । जुरैं नारि नर कइक हजारा ॥
 तिनको विविध भांति सन्मानी । वांछित अशन देत रति ठानी ॥
 मांडव रुचिर रचाय उछाहा । सीय रामको करत विवाहा ॥
 सबको मंडप तर बोलवाई । सादर विदा करत हरषाई ॥
 मुद्रा अमित दुशालन जोरी । कोहुको देत हाथ युग जोरी ॥
 कोहुको पट और वनाता । मुद्रन सहित देत हरषाता ॥
 कोहुको लोइया और रजाई । देत रुपैयन युत सुखदाई ॥
 रुपिया और उपरना रासी । कोहुको भूपति देत हुलासी ॥

दोहा—देत रुपैया सबनको, वचै न कोउ नर नारि ॥

सुख छावत गावत सुयश, जात अयन पगु धारि ७६ ॥

भरत लषण रिपुदवन युत, सीय रामको फेरि ॥

भूषण वसन अमोल दै, विदा करत छवि हेरि ॥

छीतूदास सुसंतको, साधुन सेवा हेत ॥

द्वादशसै मुद्रा वसन, अमित मोद युत देत ॥ ७७ ॥

जनकपुरी मम सोपुरी, समय सो जनक प्रमोद ॥

जनक सरिस नृप जनकहैं, चलि चलि मग चहुँ कोद ७८॥

स०—औधपुरी मुद औध किधौं, किधौं वृंदावनै दिपै मंदिर भारी

जानकीरामकीझांकीकहूँकहूँराधिका माधवकीमनहारी ॥

झालरी शंख वज्रें चहुँ ओर बसैं जहँ संत अनंत सुखारी ॥

भूप रच्यो है गोविंदगढ़ै सो अनूपम मैं निज नैन निहारी १॥

दोहा—छन छन छन धन ध्यान मन, तनक न तन धन भान।

धन धन धन जन ज्ञान पन, कन कन वनकनसान ॥

छ	छ	छ	व	ध्या	म	त	क	त	ध	भा
न	न	न	न	न	न	न	न	न	न	न
ध	ध	ध	ज	ग्या	प	क	क	व	क	सा

सारेठा—जेहि गोविंद गढ़महिं, दुखहीको दुखदेखिये ॥

डर परलोक सदाहिं, जहँ सब लोगन को अहै ॥ २८०॥

दंडनीय जहँ एक निसाना । रागरागिणीभेद विधाना ॥

क्रोध जहां क्रोधहिं पर होई । लोभ करै यशको सब कोई ॥

जहां अर्धमहिं को है त्यागा । निज तियसों ठानब अनुरागा ॥

जहँ गृह चित्र करै चित चोरी । बंधन जहां पशुनको जोरी ॥

वचन असत्य कहत रोजगारी । सुताव्याह गावहिं तिय गारी ॥

चलत कुपंथ जहां गज माते । कुटिल धनुष जहँ दृग दरशाते ॥

सुभटनके अंग जहां कठोरा । कर्कस जहँ झिल्ली गण शोरा ॥

जहां निर्द्वनी यती निहारी । वारि नीचि गति जहां निहारी ॥

दोहा—कंपध्वजामें देखिये, बंधे धौरहर धौल ॥

शोभा सब संसारते, वसी भूप पुर नौल ॥ ८१ ॥

सोरठा—कहुँ गोविंदगढ़ माहिं, कवहुँ रीवाँ नगरमें ॥

श्रीरघुराज सोहाहिं, सब राजनके मुकुट मणि॥१॥

कवित्त वनाक्षरी—वदी जे न ताकत मुसद्दी कामकाजी सवै
बैठे दुहूंओर ददीं दीननको दिलराज ॥ कदी दीहवारे औ अ-
मदी सरदार आगे बैठे अरिकरन गरदी रणकै गराज ॥ देवनदी
कैसी किंति दिपति विसदी जासु युगलेश साहिबी विहदी मनो
देवराज ॥ रही कर दुर्जन अनंदी कर सजनको राजै राजगदी
पर महाराज रघुराज ॥ १ ॥ देन समै जोई जोई याचि राख्यो
याचकहै सोई सोई देत सांच लगत न वारहै ॥ भूषणअमोल
गाँव वसन अमोल म्याना वाजि गज नोल मुद्रा कैयक हजारहै ॥
कहै युगलेश ऐसी रीतिहै हमेश केरी देखत न देश कोष ने-
कुकै विचारहै ॥ राजनके राज महाराज रघुराज ऐसो आजु तौ-
न दूजो राजा राजत उदारहै ॥२॥ पटु सब विद्यन में हटत न
काहूसोंहै निपट निशंक बुद्धि नेकु न हलतिहै ॥ चटपट जानिलेत
अटपट बात सब बात कपटीनकी न कैसहू चलतिहै ॥ महा-
राज रघुराज निकट पखंडी कोटि कुटिलऊ सटपटै थिति उस-
लतिहै ॥ कवि नटखटनकी कूर बहुकटढनकी चुगुल चवाइनकी
दाल नाग लतिहै ॥३॥ सुमति गणेश लसै साहिबीमें त्यों सु-
रेश धनमें धनेश शत्रु नाशनमहेशहैं ॥ तेजमें दिनेश मुदजनन
प्रजेश प्रजापालनमे बेश सम राजत रमेशहैं ॥ गावत नरेश
दीह निजहिं निवेश सभा सुयश विशेष जासु छाजै देश देशहै ॥
भनै युगलेश रघुराजसे सुमतधारी सुत बांधवेश औ परेस से-
वा पेसहै ॥ ४ ॥ करयुग जोरि कमलापतिसों कमलाजी कहै
युगलेश बार बार कहैं वैन कल । रावरो भगत विश्वनाथ तनै
रघुराज जन्यो जग तन्यो जासु यश चारु स्वच्छभल ॥ असित

पदारथ ते सित ह्वैगयेहैं सबै परत पिछानि नाहिं जाय जहांजौ
ने थल ॥ वसिये निरंतर की ताहि ऐके अंतरकी उदधिको
अंतर न छोंडि जैये छोनी तल ॥ ५ ॥ भागवत पढ्यो भागवत
को विश्वास मान्यो जननि सुभद्रा श्रीसुभद्रा रूप जानिये ॥
रामभक्त परमअनन्य महा भागवत विश्वनाथसिंह जासु जनक
वखानिये ॥ भागवतदास नाम तिनहीं सों पायो भयो भागवत
रूप कंठ भागवत गानिये ॥ भागवत सेवी रघुराजसिंह भागवत
जाके उर भौन भगवंत भौन मानिये ॥ ६ ॥

सवैया—याचक वृंद मलिदनको गण पाय सुपास अनंदित
हीमें ॥ आय मनोरथ पूरणकै यश गान करैं चहुँ ओर महीमें ॥
भाषतहैं कवि देशनि जाय नरेशनके दरवारनहीमें ॥ दान करी-
के कपोलनमें कीहरी रघुराजके हाथनहीमें ॥ ७ ॥

दोहा—महाराज रानी सबै, गौरी सम महिमाथ ॥

लसैं पतिव्रत धर्मरत, तजैं न कबहुं साथ ॥ ९२ ॥

महाराज रघुराजके, अमित चरित्र अनूप ॥

युगलदास वरण्यो कछुक, निजमतिके अनुरूप ९३ ॥

जामें सूचित चरित सब, ऐसो अष्टक वेश ॥

विरचतहैं युगलेश यह, सुखप्रद सुकवि विशेश ९४ ॥

अष्टक नृप रघुराज कृत, युगलदास मुदकंद ॥

सार्थ गतागत चंद्र ऋषि, सिंहवलोकन छंद ॥ ९५ ॥

अथगतागत सवैया—तो यश शीश मही सरसाय यसारस
हीम शशी सजतो ॥ तोमह तेज भसो विरमाहि हिमा रवि सो
भजते हमतौ ॥ तो जग नैरव सोहत चारु रुचा तहैं
सो वरणै गजतो ॥ तो रघुराज भजै नहिं लोग गलोहिनजै भज
राघुरतो ॥ १ ॥

अर्थ—हेरघुराजसिंह तिहारो श्रीवृंदावन अरु श्रीजगन्नाथपुरीमें सुवर्णतुलादि महादान रूप जो यह यशहै शीश मही कहे महीके शीशमें अथवा सब राजनके यश ते शीश कहे शिरा मही कहे पृथ्वीमें सरसाय कहे अधिकायकै, सारस हीम शशी सजतो. कहे सारस जो है कमल अरु हिम जोहै पाला अरु शशी जो है चंद्रमा ताको सजतो कहे आपनी शोभाते साजेहै कहै शोभित करैहै यह प्रतीपालंकारते सारस अरु हिम अरु शशिकी शोभा सब ऋतुमें सब कालमें एकरस नहीं रहैहै कमल झरिजाय है हिमगलिजाइहै शशी क्षीण है जाइहै अरु सकलंकहै अरु तिहारो यश सब कालमें एक रस रहैहै अरु निःकलंकहै याते उन सबनते अधिकहै यह वितरेकालंकार व्यंजित भयो, अरु तोमह तेज भसो विरमाहि. कहे तिहारो जो महातेजहै सो वीर जे हैं बड़े राजा तिनमें भसो कहे भासितहै ताते तिहारो तेजते तेऊ शंकित रहैहैं कि हमारी राज्य न लैलें यह सूचित भयो अथवा विरमाहि कहे सब जगमें तिहारो तेज विशेषकै रमैहै ताते तुम्हारे तेज करिके सब राजा निस्तेज है गये यह ध्वनित भयो याहीते, हिमा रविसो भजते हमतो. कहे आपने हियमें हम तो तुम्हारे तेज को रवि सों कहे सूर्यसे भजैहैं कहे भजन करैहैं अर्थात् वर्णन करैहैं यह उपमालंकारते सूर्य कमलनको आनंद देइहैं अरु तम नाश करैहैं अरु सबको सुधर्ममें प्रवृत्त करैहैं॥ अरु आपको तेज सज्जनके हृदय कमलको आनंद देइहैं औ सब राजनके वीरताके मदको, अज्ञानको नाश करैहैं अरु सबके अधर्म नाश करि सबको धर्ममें प्रवृत्त करैहैं यह अनुभया भेद रूपकालंकार ध्वनित भयो अरु, तो जग नै ख सोहत चारु. कहे जगमें तिहारो जो है नै, कहे नीति ताको जो ख कहे शोरकि

रघुराजसिंह बड़े नीतिवानहैं सो चारु कहे सुंदर सोहतहै अरु रुचा तहैं सो वरनै गजतो, तहाँ कहे तौने जगमें सो नीतिको ख सबको रुचाहै कहे सबको नीक लगैहै अर्थात् नीतिको बखान जो कोई करत सुनैहै सो तहैं खड़ो रहिजाइहै अरु वरनै गजतो कहे सोऊ जन गजत कहे गर्जनाको करत अर्थात् बड़ो शोर करत सर्वत्र वर्णन करै हैं कि रघुराजसिंह बड़े नीतिवानहैं॥ ताते आपके नीतिके सुनिवेते सबको उत्कंठा अतिशयरूप वस्तु व्यंजित भयो इससे जैसी आपकी नीतिहै तैसी आपहीकी नीतिहै यह अनन्वयालंकार ध्वनित भयो ताते आपकी राज्यमें अनीति नहींहै यह वस्तु सूचित भयो अरु गर्जत वर्णन करै हैं ताते इन के बरोबर ऐसो नीतिवारो पृथ्वीमें कोई नहीं है याते निःशंक हैं यह हेतु व्यंजित भयो ताते, रघुराज भजै नहिं लोग गलोहि. कहे याभांतिके जे तुम रघुराज सिंह हो तिनको जो कोई लोग गलोहि कहे गलते अरु हियते नहीं भजैहैं कहे नहीं भजन करैहैं अर्थात् तुम्हारे नामको मुखते उच्चारण करत जाको गल नहीं चलैहै अरु जो तुम्हारे नामको हियमें नहीं धारण करैहैं ॥ नजै भजरा कहे ताको जरा कहे नेक कबहूँ जै नहीं भयो, अर्थात् वह सबसों हारिही गयोहै अरु घुरतो कहे घुरिजातहै अर्थात् वह नाश हो जाइहै यहां प्रस्तुत करि प्रस्तुत प्रगट प्रस्तुत अंकुर नाम यह प्रमाण करिकै प्रथम प्रस्तुत कहे वर्णनीय जेहैं आप तिनते दूजे प्रस्तुत जेहैं श्रीरघुनाथजी तिनको वर्णन कवित्तके चारिहूँ तुकमें विदितई है यह प्रस्तुतांकुर अलंकारते आपकी श्रीरघुनाथजीकी उपमाव्यंजित भई ॥ १ ॥

दोहा—जन्मअष्टमी आदिदै, उत्सव जे भगवान ॥

तिनमें वितरत जननको, मुद्रा पट सहसान ॥ ९६ ॥

अथ सिंहावलोकनके उदाहरण ॥

सवैया—वीरनमें जे गने अवनी अवनीके गुनेते चुने रणधीरन ॥
 धीरन में जसहै हुलसीलसीसो तसहै जसमे जनभीरन ॥
 भीरनतेयुगलेश सुनै सुनै प्रीतिजगीनहिंदानअजीरन ॥
 जीरनसौंनहिंभौते भजैभजैजोहियरोनितश्रिरघुवरिन॥
 जाकरजागैप्रतापदिवाकरवाकरतोप्रतिपालप्रजाकर ॥
 जाकर तेज सऊगोसुधाकर धाकरमाये मनैवसुधाकर ॥
 धाकरहंवसुपाइकैताकरताकरआननताकेसुखाकर ॥
 खाकरहैदुखको कहै काकर काकर तार करै घर जाकर ॥२॥
 कामनमेंअहै आलसनामन नामनमें चहतोपरवामन ॥
 वामन बोलत बैननसामन सामनरैसो तजै केहुँजामन ॥
 जामनमेंवसतोअभिरामनरामनसो तेहिंमानैसदामन ॥
 दामनदै रघुराजकै ठामन ठामन सेवत संत अकामन ॥ ३ ॥
 कीरतिरंभाकिधौहैशची शचीजामेंअछेहकविंदनकीरति ॥
 कीरतिताँ तिन्होकी इती दुति कौनि अहै मति मेरि ऊंचीरति ॥
 चीरति यासिल धारे खरी खरी गर्व भरी चहुँ छाचि खहीरति ॥
 हीरति पूरतिहै माहि माहिमें जानि परे रघुराजकी कीरति॥४॥
 शाह सराहतभोजहि भूपर भूप रहो कितहुँ अब ना अस ॥
 ना अस ते मुख भाषत वैनहैं वैनहैं त्रासन तामस राजस ॥
 राजसमाज विराजत वासव वासव सो निगुणी गुणी पारस॥
 पार सबै करतो जु भवै भवै सो रघुराज भजो कर साहस॥५॥
 सोहत भावसों क्रीट शिरै दिये दीपत जासु शिषत्तु विमोहत ॥
 मोह तमे को विनाश करै करै कांति भूबाय दृगानिसों जोहत ॥
 जोहत भागहै जात सभाग सभागतसों सब सोच विछोहत ॥
 छोहत तापै सबै जगहै गहजो रघुराजपगे अजसोहत ॥६॥

घनाक्षरी—शारद शशीसों कोई शारद पयोदहीसों हीसो
गुनि कहै कोई लस्यो सम पारद॥पारदरशाति नहि कहि कहि
काहु मति मति कहे कोई घनसारहुकी पारद ॥ भार दरशात
पेन्हे भूप मोनी हीरा हार हार गई द्युति भाषै कविवृंद मारद
नारदकोहुते है बेहद रघुराज जस जस मही तस स्वर्ग गावती है
शारद ॥ १ ॥

दोहा—अष्टक कष्ट करै न जग, जगत् पार धन नष्ट ॥

नष्ट नहीं चित पुष्ट कवि, कवित तुष्टकर अष्ट ९७॥
सवैया—भूप अजीत अजीत भयो लियो जीत रिपून नहीं कोउ
बाचो ॥ तासु तनय नृप जयसिंह जयसिंह होत भयो रणरं
गमें राचो ॥ तासुत श्रीविश्वनाथ भयो विश्वनाथहू दान
कृपानमें साचो ॥ तासुत जो रघुराज समै रघुराज भो तौन
अचंभव सांचो ॥ १ ॥

कवित्त—जाहि जपि पतितहू पावन परम होत होहिंगे
भये हैं गये केते हरिधामको ॥ जाको यश गावत न पावत
सुकवि पार सबको अधार जो देवैया मन कामको ॥ जाके बल
शंकर विरंचि सनकादि ऋषि जागत रहत जग यामिनि त्रियाम
को ॥ चिरंजीव होवे महाराज रघुराज सदा याचे युगलेश वेश
सोई राम नामको ॥ १ अंगनि सुछबिकोटि वारिने अनंग
जासु कालको विहाल करै शोर धनु घोरको ॥ मार्तंड पावको
प्रताप जासु ताप करै शशिहूको शीतल करैत यश ठोरको ॥
चरित अशेष जासु शेषहु न अशेष लहै नाम कहै पामर पुनीत
होत जोरको ॥ चिरंजीव होवै महाराज रघुराज सदा याचै युग
लेश सोई कोशल किशोरको॥२॥जौलों राम निज नाम धाम
गुण ग्राम राखौ कीबो काल कर्महु प्रपंच पंच भाषियो॥ जौलों

विधि आदि सिधि देवनको अधिकार नित प्रीतिको विचार
कीबे अबलाखिये ॥ जोलौं दीनबंधु दृग देखो दाया दीह
दास तोलौं युगलेश विनय मोरि यश साखिये ॥ राज्यश्रीअखं
ड सुखयुत संयुत सुधर्मसाज भूप रघुराज महाराज आप
राखिये ॥ ३ ॥

सोरठा—ग्रंथ भयो जब पूर, उचित मंगलाचरणपर ॥

श्रीहरिगुरु सुख पूर, चरण कमल वंदन कहूँ ॥ ५४ ॥

कवित्त—निरत जासु नाम हरिदास हरिरूप सीय राम
सेव हीमें जिन्हें जात रैन दिन ॥ कोहू सों न कहै देखि संत
निज आश्रमै सादर करत सत्कारं आये छिन छिन ॥ कहैं युग-
लेश मान रजोगुणि वाहननि चढ़ें नहिं कबों या स्वभाव रह्यो
सब दिन ॥ कहों हरिरूप पर हरिते सरसरूप लिये ह्वै अनूप
श्रीहै येतो रहै तेहि विन ॥ १ ॥

दोहा—धरच्यो सर्प यक को विछी, यक को दुःखित कीन्ह ॥

हरिचरणामृत पाय तहैं, द्रुत निर्विष करिदीन ॥ ९८ ॥

ऐसे चरित अनेक हैं, को कह आनन एक ॥

नेक कृपा लहि नाथ मैं, वरण्यों है सविवेक ॥ ९९ ॥

जो करताहै ग्रंथको, सोउ वरणै निज वंश ॥

युगलदास याते करत, कछु निज मुख परशंस ३००

कवित्त—देश गुजरात ते नरेश संग आये यहां पुस्तबहु ति
न्हैं कहां लौं गिनाइये ॥ चैनसिंह भे दिवान अति मतिमान खास
कलम सुवंश राय तिनको सुनाइये ॥ लल्लू खास कलम
कहाये नाम मंशाराम भूपति अजीत बहु मान्यो सो जनाइये ॥
कायत प्रसिद्ध साधु सुमति अगाध तासु वंश गिरिधारी लाल
नाम जासु गाइये ॥ १ ॥

दोहा—महाराज विश्वनाथ तहि, मान्यो करि अति प्यार ॥
 सोय खास कलमहि कियो, लखि तिहि बुद्धि अपार ॥
 भोदूलाल दिवान सुजाना । रहेते अस मन किये अमाना ॥
 यह संकोच पुरुषते भारी । करौ न हमरौ हुकुम सुखारी ॥
 अस विचारि नरनाथहिं पार्हीं । कह्यो सुघर इनही सुख मार्हीं ॥
 इन्हे खास कलमी रघुनाथी । दै राखिये निकट कर साथी ॥
 सुनि विश्वनाथ हियेकी जानी । राख्यो अपने ढिग सुखमानी ॥
 ग्रंथ अनूपम अमित बनायो । सादर तासों मुदित लिखायो ॥
 तेहि सुत युगलदास मम नामा विश्वनाथ नृप ढिग अभिरामा ॥
 रह्यो बालते जे किय ग्रंथा । लिख्यो अहै जिनमें हरिपंथा ॥

दोहा—महाराज रघुराजके, अब निवसों नित पास ॥

तासु हुकुम लहि ग्रंथ यह, विरच्यों सहित हुलास ॥

नृपचरित्र यह ग्रंथको, कियो नाम अभिराम ॥

बाँचि सुकवि सजन सुमति, लहैं सदा सुखधाम ॥३॥

ग्रंथ रामरसिकावली, रच्यो जो नृप रघुराज ॥

तहँ कवीर इतिहास में, यहै ग्रंथहैं भ्राज ॥ ३०४ ॥

अथ सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचंद्र

रूपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसि

कावल्यांग्रंथान्तर्गत श्रीयुगलदासकृत व

घेलवंशवर्णनं नाम आगम निर्देश

ग्रंथसमाप्तः ॥

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” छापाखाना,

खेतवाड़ी ब्याकरोड खंवाटागल्ली—मुंबई.

जाहिरात ।

श्रीमहाभारत सटीक मोटे अक्षरका ।

महर्षि श्रीवेदव्यास प्रणांत और पंचमवेद संज्ञा होनेसे विशेष प्रशंसा करना निरर्थक है ये वही पुस्तक गणपतकृष्णाजीके छापेकी है जो पूर्वकालमें ८० । ६० रुपयेको मिलताथा उसीको हमने सब लेकर ४० रुपयेमें देते हैं. टपाल महसूल ५ रु० अलग है; परंतु अब थोड़ी पुस्तकें रह गई हैं, महाभारतके प्रेमिलोगोंको शीघ्र लेना चाहिये कुछ कालके पीछे मूल्य अधिक होजायगा. ऐसा ग्रंथ उत्तम छपनेकी आशा कमती है—लीजिये. ८० खर्चा सहित मूल्य पैंतालीस ही ४५ रुपये हैं.

मिताक्षरा(धर्मशास्त्र)पद योजना तात्पर्यार्थ भाषाटीका ।

इस असारसंसारमें मर्यादा स्थितीके हेतु अनेक प्राचीन आचार्योंका मत लेकर “आचार” “व्यवहार” प्रायश्चित्त” नामक तीनभागोंमें महर्षि याज्ञवल्क्यजीने भारतवर्षके चतुर्वर्णोंके नीति-पूर्वक स्वधर्ममें तत्पर रहनेके हेतु रचनाकी. आचाराध्यायमें गर्भाधानसे लेकर मरण पर्यन्तके समस्त संस्कार, सबजातियोंकी उत्पत्ति, ब्राह्मणादि चतुर्वर्णोंके धर्माचरण, आठ प्रकारके विवाहोंके लक्षण, भक्ष्याभक्ष्य पदार्थोंका विवेक, दानलेनेदेनेकी विधि, श्राद्ध तथा नवग्रहोंकी शान्ति, राजाओंके धर्माचरण वर्णित हैं ।

शुकसागर अर्थात् श्रीमद्भागवत भाषा ।

इसमें शंका समाधान और अनेकानेक दृष्टांत इतिहास तथा उत्तमोत्तम दोहा चौपाई भजन कवित्त मिश्रित सुंदर वार्तिक प्राकृत भाषामें बड़े २ अक्षरोंमें छपी है. आजपर्यंत ऐसी उत्तम पुस्तक अन्यत्र कहीं नहीं छपी. कीमत डाक महसूल सहित १२ रु. १० आ० है. प्रतीकके लिये श्लोकांकभी डालेगये हैं ॥

जाहिरात।

ताजिकनीलकंठी भाषाटीका।

उक्त ग्रंथका भाषानुवाद तीनो तंत्र एकत्रित कर ज्योतिर्विद पं० महीधरजीने ऐसा कठिन ग्रंथ होनेपर भी ऐसी सरल टीका तथा गूढ़ाश्यों का प्रकाश किया है कि जिसके द्वारा सामान्य श्रेणीके मनुष्य भी भलीभांति वर्ष जन्मपत्र फलादेश प्रश्नादि बता सकते हैं वैसे ही शुद्धतापूर्वक टैपमें चक्र और उदाहरणों सहित उत्तम कागजमें छापी गई है जिसके देखनेसे चित्त प्रसन्न होजायगा और उत्तम विलायती कपड़ेकी जिल्द बाँधी गई है, मूल्य केवल १॥ रु० मात्र है

शार्ङ्गधर वैद्यक दत्तराम चौबेकृत भाषाटीका सहित।

यह टीका आढमल्ली और गूढ़ार्थ प्रकाशिका जो इसकी संस्कृत टीका हैं उनके अनुसार भाषाटीका करी गई है. यद्यपि इस ग्रंथकी टीका कई भिषग्वरोंने की हैं परन्तु इस रीतिसे गूढ़ाश्योंकी टिप्पणी समन्वितकर विस्तार पूर्वक किसीने नहीं की है तिसपर भी मूल्य केवल तीन ३ रु० रक्खा है विलायती कपड़ेकी जिल्द बाँधी है और नया छपा है।

पातंजलि-योगदर्शन तथा सांख्यदर्शन भाषानुवाद सहित।

देखो ! इस पातंजलि सूत्र मात्रका ऐसा बहुत और रुचिर भाषानुवाद किया गया है कि पढ़ते २ ग्रंथका आशय चित्तमें जुभ जाता है। मूल्य केवल योगदर्शनका १ रु० और सांख्यदर्शनका १॥ रु० है।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

“श्रीवेंकटेश्वर” छापाखाना—मुम्बई.